

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : फाल्गुन-चैत्र, सम्वत् 2073-74
मार्च 2017

ओ३म्

अंक 138, मूल्य 10
अग्निदूत
अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

नवसंवत्सराभिनन्दन 2074



धर्मवीर पं. लेखराम आर्य



भगतसिंह



नवशरयेष्टि पर्व होली

नवसंवत्सर में सब गाओ,
मंगलमय शुचि शुभ श्रुति-गान ।
कीर्ति-शिखर पर रहे प्रतिष्ठित,
मेरा आर्यावर्त्त महान् ॥



महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में कक्षा 12वीं के छात्राओं का बिदाई समारोह के अवसर पर उपस्थित सभा के पदाधिकारीगण



आर्यसमाज पोतरा का वार्षिकोत्सव व क्षितान्यास समारोह पर उपस्थित सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य व अन्य अतिथिगण



महिला आर्यसमाज जवाहर नगर रायपुर के वार्षिकोत्सव पर उपस्थित महिला आर्यसमाज के पदाधिकारी व अन्य गणमान्य जन



आर्यसमाज मरौद (धमतरी) के वार्षिकोत्सव पर उपस्थित सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, 'अग्निदूत' के सम्पादक आचार्य कर्मवीर व श्रोतागण



आर्यसमाज मरौद (धमतरी) के वार्षिकोत्सव पर उपस्थित सभा उपमंत्री श्री चतुर्भुज कुमार आर्य व आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर व मरौद के पदाधिकारीगण





अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक,
राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७३

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,९९८

दयानन्दाब्द - १९३

: प्रधान सम्पादक :

आचार्य अंशुदेव आर्य

प्रधान सभा

(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :

आर्य दीनानाथ वर्मा

मंत्री सभा

(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :

श्री जोगीराम आर्य

कोषाध्यक्ष सभा

(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :

श्री दिलीप आर्य

उपमंत्री (कार्यालय) सभा

मो. ९६३०८०९२५७

★

: सम्पादक :

आचार्य कर्मवीर

मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक

प्रबंधक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१

फोन : (०७८८) ४०३०९७२

फैक्स नं. : ०७८८-४०१९३४२ ;

e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया ।

वर्ष - १२, अंक ९

ओ३म

मास/सन्-मार्च - २०१७

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सावभूतनिश्चयं ।
तदग्निस्त्रिंशकस्य दौत्यमेत्य सन्नसन्नकम्,
समाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ॥

विषय - सूची

पृष्ठ क्र.

१. सूर्योदय	स्व. रामनाथ वेदात्मकार	०४
२. राष्ट्रवाद के पुरोधा : दयानन्द	आचार्य कर्मवीर	०५
३. किताब बदल गया इन्सान	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	०८
४. वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. शिवकुमार शास्त्री	१०
५. महर्षि दयानन्द वचनामृत	आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री	१३
६. झूठ का मकड़जाल	नरेन्द्र आहूजा 'विदेक'	१५
७. सही राह	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	१७
८. कविता : नवसम्यत् हो मंगलकारी	स्व. राधेश्याम विद्यावाचस्पति	१८
९. श्रेष्ठ एवं आदर्श महापुरुष : ऋषि दयानन्द	मनमोहन कुमार आर्य	२०
१०. "बड़ा-धन"	आचार्य कर्मवीर	२२
११. कविता : "मानव"	अनिल कुमार आर्य	२३
१२. प्रेम प्रसार का पर्व : होली	श्रीमती दीपाली वर्मा	२४
१३. धर्मवीर पंडित लेखराम	डॉ. भवानीलाल भास्तीय	२५
१४. होमियोपैथी से एलर्जी का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२८
१५. समाचार दर्पण		२९

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें

Website : http://www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं ह ।



सूर्योदय

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार



दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति, दूरे अर्थस्तरणिर् भ्राजमानः ।

नूनं जनाः सूर्येण प्रसूताः, अयन्नर्थानि कृण्वन्नपांसि ॥ ऋग्. ७. ६३. ४

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः । देवता सूर्यः । छन्दः त्रिष्टुप ।

● (दिवः) द्यु-लोक का (रुक्मः) स्वर्णालंकार, (उरुचक्षाः) विस्तीर्ण दृष्टि को देनेवाला, (दूरे-अर्थः) दूर लक्ष्य वाला, (भ्राजमानः) प्रकाशमान (तरणिः) तारक सूर्य से (उदेति) उदित हो रहा है । (नूनं) निश्चय ही (सूर्येण) सूर्य से (प्रसूताः) प्रेरित (जनाः) लोग (अर्थानि) लक्ष्यों के प्रति (अयन्) अग्रसर होते हैं, (और) (अपांसि) कर्मों को (कृण्वन्) करते हैं ।

यह देखो, सामने पूर्वदिशा के क्षितिज से सूर्य उदित हो रहा है । सूर्योदय का यह दृश्य कैसा मनोमोहक और प्रेरणाप्रद है । भूमि-आकाश में फैला हुआ तमःपुंज विदीर्ण हो गया है । ज्योति की किरणें चारों ओर विस्तार पा रही हैं । रात्रिचर जीव पलायन कर गये हैं । यह सूर्य द्यु-लोक का स्वर्ण-मुकुट है । यह उरुचक्षाः है, विस्तीर्ण दृष्टि को देने वाला है । रात्रि में हमारी जो दृष्टि अन्धकार से प्रतिबद्ध हो जाती है, सूर्य के प्रकाश में वह पुनः दूर-दूर तक देखने लगती है । यह सौर जगत् के संचालन-रूप महान् लक्ष्यवाला है । यह भ्राजमान है, अद्भुत द्युति से देदीप्यमान है । यह तरणि है, आकाश-सागर को तैर जाने वाला तथा व्याधियों से तरानेवाला है । यद्यपि यह सूर्य जलती हुई गैसों का एक जड़ पिंड-मात्र है, जो अनवरत गति से चारों ओर प्रकाश फेंक रहा है, परन्तु जो विवेकी जन हैं वे इसे प्रेरणा के एक परम स्रोत के रूप में देखते हैं । वे सूर्य से प्रेरणा पाकर अपने मानस-पटल पर व्याप्त तमो जल को विच्छिन्न कर आत्म सूर्य को उदित करते हैं । वे अपने आत्मा को शारीरिक दिव्य लोक का जगमगाता स्वर्णालंकार बनाते हैं । वे संकीर्ण दृष्टि को तिलांजलि दे अपने आत्म-सूर्य से विस्तीर्ण और उदार दृष्टि प्राप्त करते हैं । वे अपना उच्च लक्ष्य निर्धारित करते हैं और गुणों से भ्राजमान होते हुए संतरणशील तथा संतारक बनकर निरन्तर लक्ष्यों के प्रति अग्रसर रहते हैं । वे निष्क्रिय जीवन व्यतीत न कर सूर्य के समान कर्मण्य बन जाते हैं । मेरे दाहिने हाथ में कर्म है, तो बाएं हाथमें विजय रखी हुई है, इस वैदिक उत्साह को अपने जीवन में मुखरित करते हैं । आओ, आज हम भी अपने अन्दर सूर्य उदित करें । तामसिकता में आनन्द न मानकर दिव्य प्रकाश की प्राप्ति के प्रयास में संलग्न हों । लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाये और उसे प्राप्त करके ही विश्राम लें ।

संस्कृतार्थः - १. रुक्म हरिण्य (निघं. १. २) । २. उस चक्षुर्ददर्शनार्थक (निघं. ३. ११) । ३. अर्थः - ऋगतौ थन् प्रत्यय, ४. प्र षू प्रेरणे । ५. अय गतौ, लेट । ६. अपस् कर्म (निघं. २. १) । ७. कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः (अथर्व. ७. ५०. ८) ।



राष्ट्रवाद के महान पुरोधे - दयानन्द

स्वामी दयानन्द सरस्वती आरंभ से ही एक चेतना-सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे। मूर्ति पर चूहे को देख जो कौतूहल जागता था, वह उनकी जागृत-चेतना का ही प्रतिबिम्ब था। वह ब्रह्मचारी बड़ा पावदर्शी-दृष्टि-सम्पन्न और गुण ब्राह्मण था, जिसकी संचेतना ने ब्रह्मचर्याश्रम में दीक्षित कर उन्हें 'शुद्ध चैतन्य' की संज्ञा प्रदान की। विकसित चेतना वाले शुद्ध चैतन्य ने अल्पायु में ही दण्डी स्वामी विजयानन्द से उनकी सम्पूर्ण विद्या ग्रहण की और अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि शब्दशास्त्र के समस्त ग्रन्थों का अध्ययन पूरा करके वेद प्रचार का लक्ष्य लेकर देश भ्रमण की उत्कट कामना से गुरु-आश्रम का परित्याग कर दिया। गुरु-दक्षिणा के उत्सव में भावी चेतना का जो उत्सव स्वामी के आत्म प्रदेश से फूटा, उसका कारण था विदा समय पर गुरु-मुख से निकला आशीर्वाद। गुरुदक्षिणा निमित्त गुरु की प्रिय वस्तु 'लौंग' की थाल दयानन्द के हाथों देखकर स्वामी विजयानन्द ने कवि के शब्दों में कहा था -

न सौम्य । वाञ्छामि सुवर्णदक्षिणां । प्रयच्छ मे जीवनमेव केवलम् ॥

“दयानन्द ! मुझे लौंग नहीं चाहिए। यदि तुम सोने की थाल भी गुरु दक्षिणा में ले आते तो भी मुझे उसकी कामना तुमसे नहीं है। मुझे जो गुरु-दक्षिणा चाहिए, वह तुम्हीं दे सकते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम देश के अज्ञान को दूर करो, कुक्षीतियों का निवारण करो, जिन ग्रन्थों में परमात्मा एवं ऋषि-मुनियों की निन्दा है, उनका त्याग कर आर्य ग्रन्थों का प्रचार करो। वैदिक ग्रन्थों के पठन-पाठन में लोगों को लगाओ, गंगा-यमुना के प्रवाह की भांति लोकहित की कामना से क्रियाशील जीवन व्यतीत करो। यही मेरी गुरु-दक्षिणा है।”

गुरु जी के इस आशीर्वाद ने ही स्वामी दयानन्द की राष्ट्रीय चेतना को जगा दिया और फिर जो राष्ट्रीयता की भावना उन्होंने देशवासियों के भीतर भरी वह राष्ट्रीय-स्वतंत्रता के निमित्त किये गये संग्रामों की निर्देशिका बनी। इतिहास में कचि बख्शने वाले भली भांति जानते हैं कि गवर्नर-जनरल लार्ड लिटन ने महाबानी विक्टोरिया को “भारत-राजेश्वरी” घोषित करने के लिए प्रथम

जनवरी सन् १८७७ में दिल्ली दरबार का आयोजन किया था। इस अवसर पर देश के सभी नरेश और अन्य गणमान्य व्यक्ति दिल्ली पधारे थे। दूरदर्शी स्वामी दयानन्द भी उस समय दिल्ली पहुंचे। वे उस दरबार में शामिल होने नहीं आये थे, देश-प्रेम की भावना उन्हें वहां खींच लाई थी। कहना न होगा कि जिस बात को देश के स्वाधीनता-संग्राम के कर्णधारों ने बहुत बाद में जाकर अनुभव किया, स्वामी दयानन्द ने उसे उसी समय अनुभव कर लिया था। सम्पूर्ण राष्ट्र में एकता की स्थापना का उपयुक्त मार्ग खोज निकालने के लिए ही वे दिल्ली आये थे। देश की एकता ही उन्नति की साधक है, देश को पराधीनता के चंगुल से छुटकारा मिलना ही चाहिए, और यह काम राष्ट्रीय एकता से ही सम्पन्न होगा, यह बात स्वामी जी ने भली-भांति अनुभव कर ली थी। स्वामी जी ने सम्पूर्ण देश की उन्नति और राष्ट्रीय एकता पर विचार करने के लिए एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में उस समय के नामी गिरामी नेता केशवचंद्र सेन, हरि देशमुख, सबरौयद अहमद खॉं, हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि भी पधारे थे। इस सभा में ही स्वामी जी ने राष्ट्रीय चेतना का संस्मनाद करने वाली 'आर्य समाज' की स्थापना का विचार प्रस्तुत किया था। यहीं से स्वामी जी ने सम्पूर्ण देश की यात्रा का विचार बनाया। वे समूचे भारत में भ्रमण के लिए निकले और सर्वप्रथम चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन देश की प्रख्यात महानगरी मुम्बई में सन् १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना कर उसके पश्चात देश के अनेक बड़े नगर में उन्होंने 'आर्यसमाज' की स्थापना की। अधिकांश विद्वानों की यह दृढ़ धारणा है, 'आर्यसमाज' ने स्वामी दयानन्द के आशीर्वाद को लेकर देशभर में एक जबर्दस्त क्रांति की जिससे देशभर में जागरण हुआ, देशभक्त बने, देश पर मर मिटने की भावना जगी। आज कांग्रेस में आर्यसमाज के अनुयायियों की संख्या कम नहीं है। हरिजन नेता भी प्रायः आज जो कांग्रेस अथवा अन्य दलों में दिखाई देते हैं, उन पर दयानन्द और आर्यसमाज की छाप दिखती है। अछूतों द्वारा, नारी जागरण, साक्षरता आंदोलन आदि की चेतना स्वामी जी ने ही जगाई थी।

देश जगाने का जो संकल्प स्वामी जी ने लिया था, वे उससे एक पग भी पीछे नहीं हटे। जिन दिनों देश में 'स्वराज्य' का कोई नाम भी नहीं जानता था, उन दिनों स्वामी जी ने देश को 'सत्यार्थप्रकाश' और 'अपने देश में अपना राज्य' का नारा दिया। स्वामी जी ने कहा था कि विदेशी शासन चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, अपने शासन से अच्छा नहीं हो सकता। स्वामी जी के ये विचार उनकी देशभक्ति और राष्ट्र भावना के प्रतीक हैं। स्वामी जी के ये विचार और लोकमान्य तिलक का यह नारा-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है - समान ही हैं।

जिस समय करोड़ों की संख्या में लोग हिन्दू-जाति से कटकर अलग हो रहे थे, उस समय स्वामी दयानन्द ने उन्हें हिन्दू बने रहने के साधन जुटाने में हाथ बटाया। आर्यसमाज की हरिजनों द्वारा की सेवा भुलाई नहीं जा सकती। राजनीतिक विचारों का आकलन और सर्वेक्षण करने वालों का यह कथन सर्वथा सत्य है - 'स्वामी दयानन्द के बाद इन जातियों के लिए जो सुधार या अधिकार मिले थे, वे राजनैतिक रहे। किन्तु स्वामी जी वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने पिछली शताब्दी में अपने प्रयत्न से अप्रसृतता निवारण करके हरिजनों को गले लगाया।' आज भी इस दिशा में 'सूदूर हरयाणा से आकर पिछले ५ दशक से आज भी दयानन्द ध्येय धर्मा श्री स्वामी धर्मानन्द

जी महाराज शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा के पहुंचविहीन वनांचल क्षेत्रों में अब तक पचासों हजार हिन्दू धर्म से किसी कारण अलग हुए विधर्मियों को पुनः मुख्य धारा में सम्मिलित करने का साहसिक कदम उठा चुके हैं। अब भी निरन्तर राष्ट्र धर्म की इस अग्नि को प्रज्वलित रखने प्रयत्नशील हैं।

महर्षि दयानन्द ने अंग्रेजों से लोहा लेकर विदेशी शिक्षा-प्रणाली के मुकाबले भारत की प्राचीनतम शिक्षा-प्रणाली को पुनरुज्जीवित करने के लिए गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति की स्थापना की। उन्हीं के पदचिह्नों पर चलकर स्वामी श्रद्धानन्द ने १९०२ में उत्तराखण्ड की पुण्यभूमि हरिद्वार में गंगा के तट पर प्रथम गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। फिर तो गुरुकुलों की बाढ़ सी आ गयी। देश की मातृ-चेतना भी प्रसुप्त थी। **स्त्रिशूद्रद्विजबन्धुनां त्रयी न श्रुतिगोचरा**, का नाश उन दिनों ज़ोरों पर था। विधियों को पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा न थी। उन्हें भी ढोंगियों ने शूद्र का दर्जा दे बरखा था। हर ओर से विधियों की प्रगति के द्वाब बन्द थे। सब से पहले इस क्षेत्र में लोहा लेने वाले भी स्वामी दयानन्द ही थे। सर्वप्रथम आपने ही स्त्री-शिक्षा के द्वाब खुलवाये। स्वामी जी की कृपा से ही भारतीय नारी को वेद-पाठ का अधिकार मिला। वे भी पुरुषों की भांति यज्ञोपवीत धारण कर सच्चे अर्थों में आर्या बनीं। आज स्वामी दयानन्द की कृपा का ही फल है कि आर्यसमाज द्वारा स्थापित सैकड़ों गुरुकुलों से निकली हज़ारों स्नातिकाएँ भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी सेवाएँ देकर कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं।

स्वदेशी की भावना भी पहले स्वामी जी ने ही जगाई। उन्होंने देशवासियों को विदेशी वस्तुओं का परित्याग करके स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने का परामर्श दिया। आपने समस्त भाषाओं की मूल संस्कृतभाषा के उन्नयन का कार्य किया। देश की एकता के लिए गुजराती होते हुए भी आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

“**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**” का स्वामी जी का लक्ष्य श्रेष्ठ पुरुषों के इकट्ठे होने का आह्वान, राष्ट्रीय एकता की ओर संकेत करता था। आज हम देख रहे हैं - देश में स्थान-स्थान पर अलगाववाद, जातिवाद, प्रान्तवाद और न जाने कौन-कौन से वाद फन फैला रहे हैं। देश भीतर से बिखरता-सा दिखायी दे रहा है। पृथक्तावाद का अजगर मुँह बाये खड़ा है। ऐसी स्थिति में आवश्यकता राष्ट्रवाद के सूत्र को समझने की है। आवश्यकता आपस में मिल बैठने की, जातिवाद और सम्प्रदायवाद की दीवारों को तोड़ने की है। आओ देश की धरती को अपनी माँ मानने की सौगन्ध लेते हुए गले मिलें, एक मानसिकता को अपने और सभी धर्मों से ऊपर राष्ट्र धर्म को अपनायें। अपनी-अपनी पूजा पद्धतियाँ, अपने-अपने रीति-रिवाज मनाते हुए भी हम राष्ट्र धर्म की महनीयता को समझे और भारत माता के सच्चे सपूत होने का प्रमाण दें। नहीं तो टुकड़ों में बंटने के बाद इससे आगे नहीं बंटेंगे, ऐसा असम्भव है। इसलिये आओ जातिवाद, सम्प्रदायवाद और क्षेत्रवाद की घिनौनी दीवारों को तोड़कर एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करने की सौगन्ध लें।

- आचार्य कर्मवीर

सन् १९४७ में भारत देश स्वतन्त्र हुआ था अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये, हमारे देश के निवासी यहां के कर्णधार बने हमने इतने में ही समझ लिया कि यही आजादी है, परन्तु यह तो केवल विदेशियों को भारत भूमि से भगाना था स्वतन्त्रता नहीं पूर्ण स्वतन्त्रता तो तब होगी जब हमारी संस्कृति जो वैदिक संस्कृति थी वह समुचित रूप से स्थापित होगी। आज भारत की स्थिति वैसी नहीं जैसी हमारे पूर्वज चाहते थे।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल, ठा. रोशनसिंह, लाहिड़ी भगत सिंह जैसे अनेकों क्रान्तिकारियों ने अपना जीवन इस देश की सुख शान्ति हेतु लगा दिया और प्राण भी अर्पित कर दिये वह चाहते थे कि हमारा देश स्वतन्त्र हो और यहां सब कुछ स्वदेशी हो विदेशी कुछ भी न हो इसीलिए क्रान्तिकारियों ने विदेशी सामान व वस्त्रों आदि की होली जलानी आरम्भ कर दी थी, आज हम उनके विचारों से लगता है दूर जा रहे हैं। स्वदेशी के नाम पर आज दिखावा व ढोंग तो होते हैं सत्यतः वह स्वदेशी विचार अभी दूर है।

आज कितने व्यक्ति हैं जो खादी का प्रयोग करते हैं, प्रथम प्रधानमंत्री के समय संसद धोती कुर्ता व टोपी वालों से भरी होती थी। आज टाई बेल्ट वाले अधिक हो गये हैं। आज नगर व महानगर के कार्यालयों में सरकारी या गैर सरकारी में धोती कुर्ता वाला कोई बिरला ही मिलेगा। विद्यालयों में मुंशी प्रेमचन्द की भांति पहले अधिकतर धोती कुर्ता पहने हुए ही अध्यापक पढ़ाते थे। यहां तक कि विद्यार्थी भी धोती कुर्ता पहनते थे। आज अध्यापक व विद्यार्थी टाई बेल्ट वाले हो गये हैं। लगता है अब हम ही अंग्रेज बन गये हैं। ग्रामों में बड़ों का सम्मान था। नगर व महानगरों में भी सभी एक दूसरे आदमी से परस्पर अभिवादन करते थे। आज वह प्रथा भी अंग्रेजी में बदल गयी है। विद्यालयों में विद्यार्थी हाय हाय बाय बाय करते हैं। ब्वाय तथा गर्ल फ्रैण्ड बनाने का विदेशी चलन बढ़ गया है। पहले प्रत्येक विद्यार्थी

लड़कियों को बहन कह कर ही सम्बोधित करता था, लड़कियाँ वड़कों को भाई कर सम्बोधित करती थीं, स्थिति और अधिक विकृत होती जा रही है छात्रावासों की सफाई के समय पता चलता है यहां तक छात्र-छात्राएँ होटल रेस्टोरेन्ट व बार में मद्यपान करते थिरकते देखे जा सकते हैं। यह सब भारतीयता के विरुद्ध है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् संस्कृत को राजकीय भाषा बनाना चाहिये था। जैसा कि आज कान्वेंट इंग्लिश माध्यम के विद्यालय खोलने की स्पर्धा हो रही है, परन्तु उनमें संस्कार नाम की कोई बात नहीं, चरण स्पर्श करने में तो उन छात्रों को लज्जा आती है, नमस्ते वह करते नहीं बचपन से ही हाय हैलो करना ही बताया जाता है। कान्वेंट स्कूल अंग्रेज और काल अंग्रेज पैदा करने के कारखाने हैं, जो मैकाले चाहता था वही आज हो रहा है।

संस्कृत के विद्यालय ही समाप्त होते जा रहे हैं, संस्कृत का पठन-पाठन समाप्त प्रायः हो गया है क्योंकि आज कुछ अंग्रेज कर्णधार यह समझ रहे हैं कि अंग्रेजी ही विकास की भाषा है उन्नति की भाषा है, जबकि अंग्रेजी देश को पीछे ले जा रही है। आज के काले अंग्रेजों का यह भ्रम है कि अंग्रेजी उन्नति की भाषा है। उन्हें देखना चाहिये कि आज चीन, जापान, फ्रांस, अमेरिका, रूस जैसे विकसित राष्ट्रों में वहां की केवल अपनी और अपनी ही भाषाएँ हैं। अपनी ही भाषाओं में उनके समस्त राजकीय कार्य होते हैं। गणित, भूगोल, सामाजिक ज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास, विधि (न्याय) सभी विषय वहां की अपनी भाषाओं में ही पढ़ाये जाते हैं। इसीलिए वह देश विकसित है। हमारे यहां उनकी नकल कर लेते हैं।

हमें अपने देश से छुआछूत, ऊँच-नीच, जातिवाद दूर करना था, अभी देश इस क्षेत्र में बहुत पीछे है हम उन हिन्दुओं को भी पुनः हिन्दू नहीं बना सके जो विदेशी लुटेरों ने तलवार से खून बहा कर हमसे अलग कर मुसलमान बना

दिये थे। अपितु उनका देश पाकिस्तान और बनवा दिया यह बड़ी भूल थी।

आज समाज में अनेक कुरीतियां व अंध विश्वास फैल रहे हैं, जिनमें मूर्तिपूजा व गुरुडमवाद सबसे भयंकर रोग है, झाड़फूंक, भूत-प्रेत व छाया का चक्कर गण्डा ताबीज बंधवाना तांत्रिकों का बढ़ता जाल भारत को सामाजिक रूप से पीछे ले जा रहे हैं। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज स्थापित किये जहां से भारत की संस्कृति व वेद का प्रचार होता रहेगा लोग अपनी संस्कृति को पहचानते व आचरण करते रहेगे। सत्यार्थ प्रकाश लिखा जिससे सहस्रों का जीवन ही बदल गया उनके अंधेरे जीवन में सत्य का प्रकाश हो गया। अभी अनेक मत मतान्तर बनते जा रहे हैं क्योंकि वह अभी अंधेरे में है यदि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ लें तो समझ आएगी कि हम क्या थे और क्या होना चाहिए।

यदि हम स्वतन्त्रता का अर्थ समझते तो कार्यालयों में बैठ देश का धन न खाते, देश के साथ गद्दारी न करते, घोटाले भ्रष्टाचार न करते, काला धन एकत्र न करते, आज अनेक उच्च पदाधिकारियों के सम्बन्ध हत्यारों, बलात्कारियों, अपराधियों से देखने में भी आ जाते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो समाज का नेतृत्व कर रहे हैं परन्तु वह व्याभिचारी, अपराधी प्रवृत्ति के हैं। देश को लूट के खाने वाले हैं, केवल अपने लिये ही प्रयत्न करते हैं, जनता की नहीं सुनते ऐसे भ्रष्ट लोगों को ऊंचे-ऊंचे उद्योगपति ही धन

देकर समाज के कर्णधार बनवा देते हैं। जहां चुनावों में अथाह धन बर्बाद किया जाता है। ग्राम प्रधान के चुनावों में ही देखा जाय तो ग्रामों में मद्य, मांस, वस्त्र धन आदि बहाया जाता है। यहां तक कि वेश्यावृत्ति तक परोसी जाती है। ऐसे लोग शराबी कवाबी इस देश का क्या भला करेंगे। यह सोचने की बात है - क्या हमारे शहीदों ने क्रान्तिकारियों ने ऐसा सोचा था कि चुनावों से पहले मतदाताओं को मद्य व मांस की दावतें दी जाय करेंगी। किसी ने कहा था कि भारत का सत्य रूप देखना चाहो तो ग्रामों में जाओ परन्तु आज ग्रामों का रूप भी विकृत हो रहा है न वह चौपाल रहीं न भाईचारा न ही शादी विवाह जैसे संस्कारों की वह रस्में सब कुछ बदल गया। वहां भी अंग्रेजी संस्कृति छा रही है। आज विवाह आदि उत्सवों पर आधुनिक कला का समावेश होता जा रहा है। पहले बैठकर पत्तलों पर भोजन करते थे अब सर्वत्र खड़े होकर प्रचलन हो गया है।

भ्रष्टाचार, बलात्कार, हत्या अपराध चरम सीमा पर है। दहेज हत्याएँ बढ़ रही हैं। बेटों की बोली लगने लगती है। ऐसे में कैसे कहें कि भारत पूरी तरह स्वतन्त्र है। आज गरीबों को न्याय नहीं मिलता वह भी बिकाऊ हो गया है। अभी पूरी स्वतन्त्रता मिलने में देर है। आर्यसमाज जैसी संस्थाएँ संघर्षरत हैं, परन्तु क्या करें अनेक आर्यसमाज भी भ्रष्टाचार के मार्ग पर चल पड़े हैं।

पता : गली नं. २, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा-२०३१३१

विचार

साहस अपना कृतकृत्य बने

भगतसिंह और सुभाष जैसा यश मिलने की सम्भावना हो तो उस मार्ग पर चलने के लिए हजारों आतुर देखे जाते हैं। समझाया जाय तो कितने ही बिना उतराई लिए पार उतारने की प्रक्रिया पूरी कर सकते हैं। पटेल और नेहरु बनने के लिए कोई भी अपनी वकालत छोड़ सकता है। पर दुर्भाग्य इतना ही रहता है कि समय को पहचाना और उपयुक्त अवसर पर साहस जुटाना सभी लोगों से बन ही नहीं पड़ता। वे जागरूक ही हैं जो महत्वपूर्ण निर्णय करते, साहसिकता अपनाते और अविस्मरणीय महामानवों की पदवी प्राप्त करते हैं। ऐसे सौभाग्यों में श्रेयार्थी का विवेक ही प्रमुख होता है। महान् बनने के लिए जहाँ आत्मा-साधना और आत्म-विकास की तपश्चर्या को आवश्यक बताया गया है वहाँ इस और भी संकेत किया गया है कि उसकी प्रखरता से सम्पर्क साधने और लाभान्वित होने का अवसर भी न चुका जाय। यों ऐसे अवसर कभी-कभी ही आते और किसी भाग्यशाली को ही मिलते। किन्तु कदाचित् वैसा सुयोग बैठ जाय तो ऐसा अप्रत्याशित लाभ मिलता है जिसे लाटरी खुलने और देखते-देखते मालदार बन जाने के समतुल्य कहा जा सके।

वेद हमारे आदि ग्रन्थ होने के साथ-साथ समस्त ज्ञान के निधि भी है। राष्ट्रीय चेतना एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय रहा है। जिस पर प्राचीन मन्त्र द्रष्टा ऋषियों से लेकर आगे के प्रायः सभी संस्कृत कवियों ने बहुत कुछ लिखा है। ऋग्वेद में देश के भिन्न-भिन्न भागों में बहने वाली नदियों का एक ही स्थान पर चित्रण करना भारत की अखण्डता का परिचायक है। यथा-

इम में गंगे सरस्वती शुतुद्रि स्तोम सचता परुण्या ।

असि कन्या मरुदथे वितस्तयार्जीकीये

शृणुह्या सुषोममा ॥

भौगोलिक एकता के लिए अथर्ववेद का अधोनिर्दिष्ट मन्त्र ध्यातव्य है। वैदिक कवि सुख-समृद्धिधारी जन्मभूमि को पुण्यप्रदा एवं वन्दनीया समझकर मातृवत उसकी स्तुति करते हैं, यथा -

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या,

भूमे मातानि मा भद्रया सुप्रतिष्ठम् ।

इसी प्रकार राष्ट्रीयता के अन्य तत्व भी वैदिक वाङ्मय में मिलते हैं। राष्ट्रीयता के विकास के लिए जातीय एकता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। वेदों में सामूहिक जीवन व्यतीत करने का सन्देश मिलता है। जो तत्कालीन भारतीयों की दृढ़ राष्ट्रीय जीवन व्यतीत करने की आस्था को व्यक्त करता है।

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम् ।

देवा भागं यथापूर्वं संजानाना उपासते ॥

वैदिक साहित्य से जिस प्रकार हमें सभी ललित कलाओं के मूलतत्व एवं विविध ज्ञान-विज्ञान प्राप्त होता है। उसी प्रकार राष्ट्रीय चेतना के मूल तत्व भी हमें वैदिक साहित्य में ही मिलते हैं।

अपनी सम्मानपूर्वक सत्ता बनाए रखने के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि अपने भू-भाग एवं देश की रक्षा भलीभांति तन-मन-धन से की जाए। इस तथ्य से

हमारे ऋषि-मुनि सुपरिचित थे। अतः भारतीय जनता में अपने भू-भाग प्रति अटूट श्रद्धा भरने के लिए उन्होंने अपने प्यारे राष्ट्र की मांगलिक गानों द्वारा मुक्तकण्ठ से ही प्रशंसा की, जिसका अवलोकन आज भी भारतीयों को समय-समय पर निजलक्ष्य के लिए प्रेरित करता है तथा वे इससे अपने देश के प्रति गौरव का अनुभव करते हैं। अपनी मातृभूमि को माता कहकर पुकारने की शिक्षा सर्वप्रथम हमें वेदों में ही उपलब्ध होती है।

“तन्नो वातो मयभु वातु भेषजं तन्माता

पृथिवी तत् पिता द्यौः ।

तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदशिवना

शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥”

परिणामतः इस धरा पर जन्म लेने वाले सभी पारम्परिक (छोटे-बड़े) भेदभावों को भूलकर अपने आपको धरती माता की गोद में जन्म हुआ जानकर अपनी इस मातृभूमि के विकास एवं रक्षण में सर्वथा जुट जाने में ही अपना गौरव मानते हैं।

ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिर्वो मध्यमासो

महसा विवावृधुः ।

सुजातासो जनुषा पृशिनामातरो दिवो मर्या

आ नो अच्छा जिगातन ॥

वेदों में राजनीतिक आदर्शों को प्रस्तुत करते हुए राष्ट्र की परिकल्पना निम्न प्रकार से मिलती है। हमारे ऋषि-मुनि भिन्न-भिन्न देवताओं को राष्ट्र प्राप्ति एवं राष्ट्र की शुभकामना से आहुतियाँ देकर इसकी सर्वतोममुखी प्रगति के लिए प्रार्थनाएँ किया करते थे तथा इसे राष्ट्रप्राप्ति यज्ञ की संज्ञा से अभिहित किया जाता था-

“इवं तद् युज उत्तरमिन्दं शुम्भाम्यष्टये ।

अस्य क्षत्रं त्रिय महीं वृष्टिरिव वर्धया तृणम् ॥

अस्मै क्षत्रमग्नीषोमावस्मै धारयतरयिम ।

इमं राष्ट्रस्याभिवर्गे कृणुतुं युज उत्तरम् ॥

सबन्धुश्चासबन्धुश्च यो अस्मां अभिदासति ।
सर्वं तं रन्धासि में यजमानाय सुन्वते ॥”

वे राजे-महाराजाओं को राष्ट्र के संरक्षण एवं पालन हेतु प्रेरणाएँ देते रहते थे । हे राजन् ! तुम प्रजाओं के साथ ऐसा आचरण करो कि वे तुम्हारी हार्दिक प्रशंसा करें तथा तुम उन्हीं के द्वारा चुने जाओ ।

त्वां विशो वृणतां राज्या ।

इतना ही नहीं, ऋषिगण याज्ञिककृत्यों में भी राष्ट्र की ही खुशहाली के लिए प्रभु से प्रार्थनाएं करते रहते थे कि राष्ट्र के सभी ब्राह्मण ज्ञान-सम्पन्न हो राष्ट्र रक्षक, क्षत्रिय शूरवीर, शस्त्रास्त्र, कलाप्रवीण, बली, अश्व, द्रुतगामी एवं स्त्रियां सर्वगुणसम्पन्न हों, रथी योद्धाओं से जय प्राप्त करने की इच्छा बलवती तथा युवक निर्भीक एवं सुशील हो मेघ आवश्यकतानुसार वर्षा करें, औषधियाँ फले-फूले अभीष्ट वस्तुओं की उपलब्धि प्रत्येक जन को होती रहे एवं प्राप्त हुई सामग्री सुरक्षित रहे ।

“आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामः आ राष्ट्रं राजन्यः शूर इषव्यो तिव्याधो महारथो जायताम् ॥”
दोग्ध्री धेनुर्वोदाननङ्गवानशः संप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू ।
रथेष्ठाः सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायताम् ॥

निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ।

औषधयः पंचयन्तामः योगक्षेमो न कल्प्यताम् ॥

यहां तक कि वर-वधू के आशीर्वाद में भी उन्हें राष्ट्र की समृद्धि ही परिलक्षित होती है ।

“अभिवर्धतां पयासाभि राष्ट्रेण वर्धताम् ।

रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ ॥”

उन्हें सभी जातियों की पारम्परिक एकता ही अभीष्ट थी । वे यह भी समझते थे कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि सभी जातियों का एकीकरण ही राष्ट्र के हित में सिद्ध हो सकता है इसके लिए भी उन्होंने देवताओं से प्रार्थनाएँ करते हुए समाजवर्ग से यह निवेदन किया है कि अपने मन अपने विचार एवं अपने-अपने क्रियाकलापों से किसी भी प्रकार का मतभेद न रखें ।

“आयातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः संवेशयन्
पृथिवीमुस्त्रियाभिः ।

अथास्मभ्यं वरूओ वायुरग्निर्बृहदाराष्ट्रं
संवेश्यं दधातु ॥”

अपने राष्ट्र में संगठन एवं आदर्श सामाजिक जीवन को ही महत्व देने वाले वे समाज में सामुहिक जीवन व्यतीत करने का सन्देश देते थे कि संग-संग चलें, तुम्हारे मन एक रहे जैसे देवता पहले से करते आए हैं, उसी प्रकार बराबर भाग करो । तुम्हारी मन्त्रणा में, तुम्हारी समितियों में, तुम्हारे विचारों में एवं तुम्हारे चिन्तन में समानता हो, तुम्हारे हृदयों में और तुम्हारे मनो में एकता की भावना बनी रहनी चाहिए । जिससे तुम्हारी सामुदायिक एवं सांघिक शक्ति का विकास होता रहे ।

“संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवाभागं यथा समितिः समानं मनः सह चित्तमेधाम् ।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रेये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वाः सुसहासति ॥”

इतना ही नहीं वे हमारी वैदिक संस्कृति में सम्पूर्ण राष्ट्र को अपना घर समझने एवं उसकी घर की भांति ही देखभाल करने की भी प्रेरणा भारतीयों में जागृत करते हैं ।

“जनं बिभ्रती बहुधा विवाचस नाना धर्माणं

पृथिवी यथौकसम् ।

सहस्रत्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव

धेनुरनपस्फुरन्ती ॥”

उन्होंने सभी वर्गों के जनसमुदाय में सजातयिता के भाव भरते हुए यह भी कहा कि हम सभी इस धरती माता से उत्पन्न हुए हैं । इसी का सब कुछ खा पी रहे हैं । अतः हम सभी इसी के हैं इसलिए हम सभी संगठित हो तथा आपस में कोई भी किसी से द्वेष न रखें ।

भारतीय वैदिक संस्कृति विश्वभर के लिए ही शान्ति एवं परमपावनता का सन्देश प्रारम्भ से ही देती रही है । मानवमात्र में समदर्शिता की पावन विचारधारा से ओत-प्रोत यह अपने घर अपने परिवार तथा अपने देश की सीमाओं का भी अतिक्रमण करती हुई सृष्टि के हर प्राणी में एकसूत्रता एवं आत्मीयता को ही सर्वथा स्थापित करती चली जाती है । जिसकी सीमा का विस्तार अनन्त है ।

“कृण्वन्तो विश्वमयम् ॥”

मानव मात्र में भातृभाव स्थापित करने वाले अनेकों ही मन्त्र यहां द्रष्टव्य है। मैं मनुष्य क्या सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ। हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें-

“मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥”

क्योंकि सारी सृष्टि के ही प्राणी उसी परमपरमेश्वर की ही सन्तान अर्थात् अंशरूप हैं। इसलिए सभी एक हैं। ऐसी आस्था हमारी इस वैदिक संस्कृति ने समाज के समक्ष रखी है। यही कारण है कि सम्पूर्ण विश्व अर्थात् जन-जन की ही मंगल-कामना भारतीयों का प्रमुख धर्म रहा है। विश्व शान्ति की भावना वेदों में किस प्रकार जन-जन को प्रेरित करती है- द्युलोक, अन्तरिक्ष-लोक और पृथिवी लोक, सुख-शान्ति-दायक हो जल, औषधियाँ तथा वनस्पतियाँ

शान्ति देने वाली हों, समस्त देवता, ब्रह्म और सब कुछ शान्तिप्रद हो, जो शान्ति विश्व में सर्वत्र फैली हुई है। यह मुझे प्राप्त हो मैं सर्वदा शान्ति का अनुभव करूँ।

“द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति पृथिवी

शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवा शान्ति

ब्रह्म शान्तिः सर्वशान्तिः शान्ति

रेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥”

संक्षेपत यह मानना होगा कि संकेत के रूप में दिए गये इन उद्धरणों के अतिरिक्त भी राष्ट्रभाषा स्वराज्य भावना मातृभाषा के प्रति आदर, गोकामना सत्य, अहिंसा, आदर्श जीवन, पवित्रता, ओजस्वी जीवन आदि सभी पहलुओं पर राष्ट्रवासियों को प्रेरणा दी गई है। जिनका अनुकरण आज भी देशवासी बड़े गौरव से करते हैं।

पादटिप्पण्य :

१. ऋग्वेद १०.७५.५
२. अथर्ववेद १२.११२
३. वही १२.१.६३
४. ऋग्वेद १०.१९.१२
५. ऋग्वेद १.८९.४ एवं द वही १.१६४.३३,
११९.१६, ५.४२.१६
यजुर्वेद २.१०, अथर्ववेद १२.११०, १२, ११२,
१२.१६३
६. ऋग्वेद ५.५९.६ एवं द वही ५.६०.५, ८.७.१७
७. वही ३.४२ एवं द वही १९, ४८.४, ६.८८.३, ३.४
८. यजुर्वेद २०.९, ऋग्वेद १०.१७४
९. यजुर्वेद २२.२.२ एवं द
१०. अथर्ववेद ६.७८.२ एवं द वही ४.२३,
१.१२.११, १८, ऋग्वेद ५.३२.११
११. वही ३.८.१ एवं द ३.८.५, १.२०.१
१२. ऋग्वेद १०.१९१९.२.४ एवं द वही ५.४५.६,
अथर्ववेद ६.६४१-३
१३. अथर्ववेद १२.१४५ एवं द १२.१.२

१४. ऋग्वेद ९.६३.५

१५. अथर्ववेद १२.१.४५ एवं द १२.१२

१६. यजुर्वेद ३६.१७ एवं द वही ३६.१० ऋग्वेद ७.३.५८

-: सन्दर्भ सूची :-

अथर्ववेद:- अपौरुषेय, स्वाध्याय मण्डल, पारी सं. तृतीय (१-५) १९५० सं. प्रथम (६-१०) १९२९ सं. तृतीय (११-१६), सं. प्रथम (१९-२०) १९६०.

ऋग्वेद:- अपौरुषेय, गंगा बुक डिपो, घीयामण्डी, मथुरा सं. प्रथम १९६९.

ऋग्वेद:- अपौरुषेय, संस्कृति संस्थान बरेली, सं. तृतीय १९६५.

यजुर्वेद:- अपौरुषेय, गंगा बुक डिपो, घीयामण्डी, मथुरा सं. प्रथम १९६९.

ऋग्वेद:- अपौरुषेय, स्वाध्याय मण्डल पारडी सं. प्रथम १८६७, ७०, ७८ तीन भाग क्रमशः।

०-०

पता : राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोट,
पंचकूला (हरियाणा)



विश्व के इतिहास में धर्म, राजनीति और समाजसेवा इन तीनों क्षेत्रों में अपनी भूमिका निर्वाह करने वाले दुर्लभ महापुरुषों की श्रेणी में महर्षि दयानन्द अग्रगण्य हैं। जिन्होंने वेदोक्त धर्म की सच्ची व निष्प्रान्त व्यवस्था की। अनेक सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात किया। साथ ही स्वदेशी राज की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए स्वतन्त्रता का शंखनाद करके विश्व का महान उपकार किया।

विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, आदित्य ब्रह्मचारी, महानयोगी, सन्तहृदय दया, करुणा, परोपकार, सरलता, सहिष्णुता के धनी महर्षि दयानन्द महाराज के अनमोल वचनों को पाठकों के लाभार्थ यहां प्रस्तुत करते हैं:-

- (१) जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान होता है।
- (२) जब तक इस होम का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।
- (३) जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।
- (४) जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तब तक राष्ट्र बढ़ता रहता है। जब दुराचारी हो जाते हैं, तब राज्य नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।
- (५) जिससे दुःखसागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं, उन्हीं को तीर्थ समझता हूँ, इतर जलस्थलादि को नहीं।
- (६) मुक्त के साधन, ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्य विद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि है।
- (७) परमात्मा की इस दृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता।
- (८) कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।
- (९) परोपकार और परहित करते समय अपना मान अपमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।
- (१०) जो मनुष्य जगत का जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।
- (११) जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है, वह गृहस्थ में भी ब्रह्मचारी के सदृश है।
- (१२) सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।
- (१३) जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश पर हानि मात्र करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।
- (१४) वस्तुतः जन्म तीन उत्तम शिक्षक, अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य ! वह सन्तान बड़ी भाग्यवान ! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं।
- (१५) जो कोई सभा में अन्याय होते हुए देखकर मौन रहे अथवा सत्य न्याय के विरुद्ध बोले, वह महापापी होता है।
- (१६) एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति, तदधीन सभा, समाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा

राजसभा के आधीन रहे ।

- (१७) जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वह प्रशंसनीय है ।
(१८) मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख-दुःख और हानि लाभ को समझे । अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा (यदि) निर्बल हो तो उससे भी डरता रहे ।
(१९) मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है

तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़कर असत्य में झुक जाता है ।

- (२०) मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिये न कि वाद विवाद विरोध करने कराने के लिए ।

पता :- फ्लैट नं. सी.१, पूर्ति अपार्टमेंट, विकासपुरी
नई दिल्ली-१८

विडम्बना

पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव

नई सदी से मिल रही, दर्द भरी सौगात ।
बेटा कहता बाप से, तेरी क्या औकात ॥

पानी आँखों का मरा, मरी शर्म और लाज ।
कहे बहू अब सास से, घर में मेरा राज ॥

भाई भी करता नहीं, भाई पर विश्वास ।
बहन पराई हो गई, साली खासमखास ॥

मंदिर में पूजा करें, घर में करें क्लेश ।
बापू तो बोझ लगे, पत्थर लगे गणेश ॥

बच्चे कहाँ अब शेष है, दया, धरम, ईमान ।
पत्थर के भगवान हैं, पत्थर दिल इन्सान ॥

पत्थर के भगवान को, लगते छप्पन भोग ।
मर जाते फूट-पाथ पर, भूखे प्यासे लोग ॥

पहना मुखौटा धर्म का, करते दिन-भर पाप ।
भंडारे करते फिरे, घर में भूखा बाप ॥

-: निवेदन :-

जरा विचार करें वैदिक ज्ञान को अर्थात् ऋषियों के ज्ञान को छोड़ने से देखिये देश की, समाज की व संतानों की क्या दुर्गति हो रही है । आज का परिवेश कितना शर्मसार हो गया है । प्रिय सज्जनों, अब भी वक्त है, हम संभल जाचयें, ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर तथा उनके द्वारा दी गई आर्ष शिक्षा का पाठ्यक्रम लागू करें और विदेशी ज्ञान का जो मनुष्य को राक्षस बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है । उस को बहिष्कृत करें ।

मित्रों एक और है कि तोता दूसरों की वाणी के द्वारा बोले गये शब्द को बोलता है, इसलिए वह पिंजरे में कैद रहता है और कोयल अपनी ही स्वभाषा बोलती है, जिससे वह स्वतन्त्र होती है । अतः आर्यावर्त के सज्जनों हम अपना ज्ञान को पुनः सभी ओर फैलाये अन्यथा १९४७ के पूर्व दिन आने में दर नहीं ।

पता :- ऋषि कुमार आर्य, वेद विभूषण आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)

आज के इस भौतिकवादी युग में भौतिक सुख सुविधाओं की लालसा इच्छा अपेक्षा और आकांक्षा में मनुष्य इस तथाकथित प्रगति के सोपान चढ़ने के लिए झूठ का शार्टकट मनुष्य के जीवन का कटशार्ट कर देता है। झूठ बोलने वाले व्यक्ति को हो सकता है कि ऐसा प्रतीत हो कि एक झूठ बोलने से उसे कुछ तात्कालिक लाभ हुआ या वह झूठ बोलकर किसी दंड से बच गया लेकिन झूठ बोलने के दूरगामी परिणाम उसके लिए सदैव बहुत हानिकारक होते हैं। एक झूठ की अंतहीन सी कड़ी बुननी पड़ती है और झूठ बोलने वाला अंततः मकड़ी की तरह खुद अपने बुने हुए झूठ के मकड़जाल में फंस जाता है। झूठ बोलने के दुष्परिणामों पर यदि हम विचार कर लें तो शायद इस बुराई से बच सकें।

- झूठ बोलने वाले का कोई कभी विश्वास नहीं करता क्योंकि एक बार झूठ पकड़े जाने पर सामने वाला व्यक्ति सदा उसके कथन पर संशय ही करता है।
- झूठ बोलने वाला स्वयं भी कभी निश्चित नहीं रह सकता क्योंकि उसे सदा इस बात का भय लगा रहता है कि कहीं उसका झूठ पकड़ा ना जाये।
- झूठ बोलने वाला सदा तनावग्रस्त रहता है और झूठ पकड़े जाने पर क्रोध में आ जाता है। दोनों ही स्थितियां स्वयं उसके लिए हानिकारक

होती है।

- झूठा व्यक्ति झूठ बोलकर अधर्म का आचरण करता है और अंत में ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में झूठ रुपी पापाचार के लिए दंड का भागी बनता है।
- कष्ट के समय भी कोई झूठे व्यक्ति की सहायता नहीं करता क्योंकि उस समय भी लोग यही सोचते हैं कि झूठा उनकी सहायता या सहानुभूति पाने के लिए झूठ बोलकर कष्ट होने की नौटंगी कर रहा है।
- झूठ बोलने वाले की सत्य बात को भी लोग झूठ समझ लेते हैं।
- झूठ बोलकर उसे छिपाने का प्रयास करने पर उत्पन्न तनाव के कारण मनुष्य के शरीर में कई रासायनिक परिवर्तन होते हैं और उनके कारण उच्च रक्तचाप या बी.पी., मधुमेह, हृदय रोग आदि बीमारियाँ हो जाती है।
- झूठ पकड़े जाने पर लड़ाई झगड़े पैदा होते हैं और इससे पारिवारिक सामाजिक तनाव भी पैदा होता है। झूठ बोलना और झूठ बोलकर फायदा लेने की कोशिश करना अक्सर परिवारों में संबंधों के टूटने का कारण बनते हैं और अंततः यह परिवारों के टूटने का कारण बनता है।

अतः हम सभी को चारिए कि झूठ का त्याग करके सत्य के व्रत को धारण करके जीवन में निर्भय और निश्चित होकर जीवन व्यतीत करें।

- पता : ५०२, जीएच २७, सैक्टर-२०, पंचकूला



**२३ मार्च
बलिदान
दिवस**

फांसी की बेला पर साथियों को शहीद भगतसिंह का अंतिम पत्र मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कौन होगा

भगतसिंह द्वारा फांसी की बेला पर साथी क्रान्तिकारी दुर्गा भाभी को लिखे लम्बे पत्र की कड़ी में, अमर शहीद की लेखनी से उसी बेला में लिखा यह संक्षिप्त पत्र भविष्य की पीढ़ियों को भगतसिंह के जीवन और क्रान्ति-कर्म की अनुकरणीय साक्षात्कार कराता है। साथियों,

जिन्दा रहने की ख्वाहिश कुदरती तौर पर मुझमें भी होनी चाहिए। मैं उसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मेरा जिन्दा रहना मशरूत सशर्त है, मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जिन्दा रहना नहीं चाहता। मेरा नाम हिन्दुस्तानी इंकलाबी पार्टी का मरकजी निशान बन चुका है और इन्कलाब पसन्द पार्टी के आदर्शों और बलिदानों ने मुझे बहुत ऊँचा कर दिया है, इतना ऊँचा कि जिन्दा रहने की सूरत में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। आज मेरी कमजोरियाँ लोगों के सामने नहीं हैं। अगर मैं फांसी से बच गया तो वो जाहिर हो जायेंगी और इन्कलाब का निशान मद्धिम पड़ा जायेगा या शायद मिट ही जाय, लेकिन मेरे दिलेराना ढंग से हंसते-हंसते फांसी पाने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए बलिदान होने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि इन्कलाब को रोकना साम्राज्यवाद की तमामतर कोशिशों के भी बस की बात न रहेगी। हाँ, एक विचार आज भी चुटकी लेता है। देश और इंसानियत के लिए जो कुछ हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ हिस्सा भी मैं पूरा नहीं कर पाया। अगर जिन्दा रह सकता तो शायद इनको पूरा करने का मौका मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवा कोई लालच मेरे दिल में फांसी से बच रहने के लिए कभी नहीं आया। मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कौन होगा ? मुझे आजकल अपने आप पर बहुत नाज है। अब तो बड़ी बेताबी से आखिरी इम्तेहां, अन्तिम परीक्षा का इन्तजार है। आरजू है कि यह और करीब हो जाये।

साभार - राजधर्म

जीवन का वास्तविक उद्देश्य

आहारार्थं कर्म कुर्यादनिन्द्यं कुर्यादाहारं प्राणसन्धारणाय ।

प्राणाः सन्धार्या तत्त्वजिज्ञासनाय तत्त्वं जिज्ञास्यं येन भूमौ न जन्म ॥

भावार्थ :- आखिर मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है ? पुनरपि जननं पुनरपि मरणं-तो सभी सांसारिकों का होता ही है। कुछतो सोचिए भला ? क्या-आपने कभी विचार किया ? यह कटु सत्य है कि आहार की आवश्यकतार्थ मनुष्य को श्रेष्ठ जीविकोपार्जन के लिए दत्तचित्त एवं तत्पर रहना चाहिए। परन्तु अनिन्द्य कर्मों के द्वारा ही आजीविका को अपनावे यह ठीक नहीं। यदि पाप अन्याय छल-कपट से धन कमायेगे तो वह कभी सुखदायी नहीं होगा उससे अशान्ति ही मिलेगी। और आहार भोजनादि की आवश्यकता मनुष्य के लिए क्यों है ? इसलिए न कि-प्राणों का धारण ही अन्न से किया जाता है। अन्न वै प्रजापतिः अन्न को विधाता कहा गया है यदि अन्न ही नहीं ग्रहण किया जाए तो सांसारिक प्राणी जीवित नहीं रह सकता। अतएव उदरपोषणार्थ, प्राणसन्धारणार्थ मनुष्य आहार का सेवन अवश्य करें।

- सुभाषित सौरभ

“कुछ परेशान होकर वह एक सन्यासी की शरण में आया। सन्यासी ने समझाया- क्या रखा है संसार के भोगों में। तुच्छ सुखों में। मल-मूत्र की खान है शरीर। वात-पित्त कफ से बना ये गन्दा शरीर रोग-शोक से भरा जीवन। क्यों घर गृहस्थी के झमेले में पड़ना चाहते हो? जीवन का उद्देश्य है मुक्ति प्राप्त करना। साधना करो। संसार से विरक्त किसी कोने में सबसे छिपकर ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए तप करो। अपना कल्याण करो।”

उसे सन्यासी की बातें पसन्द आईं। उसने घर जाकर माँ से कहा - “मैं संसार छोड़ना चाहता हूँ।” माँ ने कहा - “संसार तो मृत्यु के बाद आप ही छूट जाता है। क्या तुम आत्म हत्या की सोच रहे हो। अपनी बेरोजगारी, असफलताओं से भाग खड़े होना कायरता है। क्या मेरा पुत्र इतना गया गुजरा है कि अपने परिवार के लिए दो वक्त का भोजन नहीं जुटा सकता।”

बेटे ने कहा - “मैं ऊब गया है संसार से। वैराग्य की कुल्हाड़ी से मोह को काटकर ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करके अपना भला करना चाहता हूँ। जीवन सफल बनाना चाहता हूँ।”

माँ ने समझाते हुए कहा - “तुम इतने स्वार्थी कैसे हो सकते हो? अपने कल्याण के लिए सब कुछ कैसे छोड़ सकते हो? समाज का ऋण, देश का ऋण, पितृ का ऋण, देव ऋण, ऋषि ऋण ये सारे ऋण कौन चुकायेगा? क्या तुम अपने आप स्वयं ही पैदा हो गये थे? दो परिवार मिले, विवाह हुआ। फिर गर्भ में तुम्हें धारण किया। पालन-पोषण किया। पढ़ा-लिखाकर बड़ा किया। इस सारी प्रक्रिया में तुम्हारे जन्म से लेकर

जवान होने तक माता-पिता, समाज परिवार देश सबका सहयोग रहा है। तुम इन सबके बारे में सोचना छोड़कर अपने बारे में कैसे सोच सकते हो? विवाह करो, परिवार का पालन पोषण करो। वृद्ध माता-पिता की सेवा करो। अपनी भावी संतान को एक श्रेष्ठ नागरिक बनाओ। यदि सभी तुम्हारी तरह स्वार्थी होकर संसार से भागते रहे, तो बिना परमाणु युद्ध के ही संसार के नष्ट होने की संभावना है। जनन-प्रजनन की प्रक्रिया जरूरी है। इसके लिए विवाह जरूरी है।”

बेटे ने माँ की बात सुनकर कहा - “माँ मैं इन सब झमेलों में नहीं पड़ना चाहता। मनुष्य जीवन की सार्थकता आत्म ज्ञान में है। सन्यासी कहते हैं नारी नरक का द्वार है।”

माँ ने गुस्से से कहा - “तुम तो सारी स्त्री जाति का अपमान कर रहे हो। मेरा भी, अपनी बहिन का भी। वासना की दृष्टि से नारी नरक का द्वार है। लेकिन प्रेम, ममता, स्नेह का दूसरा नाम नारी है। क्या माँ की ममता, बहिन का स्नेह पत्नी का प्रेम नरक का द्वार है? किस मूर्ख ने कहा ये सब?”

माँ की बात सुनकर बेटे ने कहा - “माँ, मूर्ख ने नहीं, सन्यासी बाबा ने कहा।”

“बेटा” माँ ने कहा।

“मैं तुम्हारे सन्यासी बाबा की तरह ज्ञानी तो नहीं हूँ किन्तु इतना जानती हूँ कि मोक्ष अंतिम चरण है। इसके पहले धर्म, अर्थ और काम है। क्रमबद्ध चलो, चलना ही है तो। अपनी बेकारी, कमजोरी, जीवन के भय से भागने की कोशिश मत करो। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठो। मत करो विवाह। भूल जाओ बूढ़े

माता-पिता को। किन्तु समाज के प्रति भी तुम्हारे कुछ दायित्व है। समाज से जो लिया है, उसे लौटाना तुम्हारा कर्तव्य है। सन्यास की आड़ लेकर तुम कर्तव्यों से नहीं भाग सकते। जाओ किसी सामाजिक संस्था से जुड़ जाओ और समाज के भले के लिए काम करो। अस्पताल जाकर गरीब, बेसहारा मरीजों की देखरेख करो। किसी अनाथाश्रम में जाकर अनाथों को शिक्षा दो। भागो मत। कर्म करो समाज कल्याण के लिए। कर्म के बिना मुक्ति संभव नहीं है।

दयानन्द, विवेकानन्द भी सन्यासी थे। उन्होंने समाज के प्रति अपना दायित्व निभाकर मुक्ति का मार्ग चुना। विवाह करके किसी स्त्री को सम्मान और प्यार के साथ उसकी रक्षा-सुरक्षा करते हुए उसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखना भी तप है। बच्चों को श्रेष्ठ नागरिक बनाना भी मुक्ति का मार्ग है। नारी नरक का द्वार होती तो भगवान राम, कृष्ण भी विवाह ही नहीं करते। याद रखना बेटे जीवन से भागना मुक्ति का रास्ता नहीं है। जीवन को जीकर जीवन से जूझते हुए कर्तव्यों का श्रेष्ठ तरीके से पालन करना मुक्ति का रास्ता है। जो भागते हैं वे भागते ही रहते हैं। उन्हें शांति नहीं मिलती। बेटे को माँ की बात समझ में आ गई। बेटे ने माँ के चरण छूते हुए कहा - “माँ प्रथम गुरु होती है बेटे की। आप तो मेरी धर्म गुरु भी हुई आज से। मैं स्वार्थी नहीं साहसी बनूंगा। मैं कायर, भगोड़ा नहीं। जीवन के महाभारत में सौन्दर्य की तलाश करते हुए अपने सभी कर्तव्यों का पालन करूंगा।”

बेटे को सही राह पर आते देख माँ के चेहरे पर प्रसन्नता छा गई।

पता : पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव,
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

**जितना-जितना ज्ञान बढ़ेगा, उतना-
उतना सफलता से फासला घटेगा.**

नवसंवत् ही मंगलकारी

नव संवत् हो मंगलकारी, जन जन में आये सद्बुद्धि।
परहित के भावों की मन में, सहसा हो अभिवृद्धि ॥

मंगलमय हो नव संवत्सर, मंगलमय हो घर आंगन।
मंगलमय हो इस धरती का, सत्य-शिव-सुन्दर कण कण ॥

आज हमारे अन्तस्थल में प्रेम भाव हो पुनः प्रदीप्त।
करुणा क्षमा सहिष्णुता से, अन्तर्मन हो फिर उदीप्त ॥

भाव शत्रुता के मिट जाये, उर में जागे मित्र भावना।
पूर्ण सदा हो मानव मन की इच्छा के अनुकूल कामना ॥

राम कृष्ण की, दयानन्द की परम्परा हो फिर जीवित।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से, एक दूसरे का हम हित ॥

मिटे नये इस संवत्सर में, फैला जो अन्याय अनय।
सभी दिशाएँ हो मंगलमय, जन जन हो वसुधा पर निर्भय ॥

मानवता के मंगलकारी पथ पर ही अब बढ़े चरण।
सच्चरित्रता का ही हम सब, जीवन पथ पर करें वरण ॥

भ्रष्टाचार मिटे, जिसने है किया राष्ट्र को अब अक्रान्त।
जागृति का नवमंत्र मिले अब, जागे मानव मन उद्भ्रान्त ॥

रुदन मिटे इस वसुन्धरा का छा जाये कुल हर्षोल्लास।
स्वार्थवाद को दे तिजाञ्जलि, जगे धरा पर नूतन आश ॥

मानवता की जय का डंका बजे पुनः भूमंडल पर।
जन जन हित की मंगलकारी, आया यह नववर्ष संवत्सर ॥

प्रणेता

स्व. राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

नव वर्षा भिनन्दनम्

चैत्रे मासि जगद्ब्रह्म ससर्ज प्रथमेऽहनि ।

शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति ॥

अर्थात् : चैत्र शुक्ल के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्म ने जगत् की रचना की ।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

की ओर से

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसम्बत्सर एवं

आर्यसमाज स्थापना दिवस

के पावन अवसर पर समस्त प्रदेशवासियों एवं सुधि पाठकों को

हार्दिक शुभकामनायें ।



प्रधान
आचार्य अंशुदेव आर्य



मंत्री
दीनानाथ वर्मा



कोषाध्यक्ष
जोगीराम आर्य

सर्वे भवन्तु सुखिनः सुहृदो मदीयाः,
सम्प्राप्य कीर्तिमतुलान्निजकर्मजाताम् ।
स्वस्थाभवन्तु शुभकर्मफलानि लब्ध्वा,
लाभप्रदो भवतु वो नव वत्सरोऽयम् ॥



शुभाकांक्षी
आचार्य कर्मवीर
सम्पादक, अग्निदूत

विवेचनात्मक 'श्रेष्ठ एवं आदर्श महापुरुष-ऋषि दयानन्द'

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून



ऋषि दयानन्द संसार के मनुष्यों व सभी ज्ञात महापुरुषों में सर्वश्रेष्ठ आदर्श महापुरुष हैं। इसके अनेक कारण एवं प्रमाण हैं जिनके आधार यह निष्कर्ष निकलता है। महाभारतकाल वर्तमान से लगभग 5,200 वर्ष पूर्व है। महाभारत काल के बाद ऐसे अनेक पुरुष व महापुरुष हुए जिनके बारे में देश व संसार के लोगों की अलग अलग राय है। एक व्यक्ति को कुछ लोग अपना महापुरुष मानते हैं तो दूसरे अनेक कारणों से उसके महापुरुष होने का खण्डन करते हैं। किसी ने एक मत का प्रचार किया तो दूसरे ने दूसरे व अन्य मतों का प्रचार किया। कोई भी मत संसार में सर्वमान्य नहीं है। वेदों के आधार पर यदि समीक्षा करें तो सभी मतों में कमियाँ व अज्ञान मिश्रित मान्यताएँ पाई जाती हैं जिसका कारण मत पंथों के आचार्यों व उनके ग्रन्थों के प्रणेताओं का अल्पज्ञ व सीमित ज्ञान वाला वा अविद्यायुक्त होना है। हम यह भी जानते हैं कि यदि हम ज्ञानशून्य वा अपूर्ण ज्ञान वाले होंगे तो हमारे कर्म कभी भी पूर्ण फलदायक नहीं हो सकते। इसके लिए पूर्ण सत्य व यथार्थ ज्ञान की आवश्यक सभी मनुष्यों को अभीष्ट है। ऐसे 'स्वतः प्रमाण' ग्रन्थ संसार में केवल चार वेद ही हैं जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से उत्पन्न हुए थे। वेदों की यह विशेषता है कि यह सभी सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। इनकी कोई मान्यता व सिद्धान्त सृष्टिक्रम के विरुद्ध नहीं है। संसार में सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान का आधार भी यह वेद ही हैं। यह तथ्य है कि यदि संसार में वेद न होते तो अतीत और वर्तमान में ज्ञान व विज्ञान का विकास व विस्तार न हुआ होता।

संसार में सबसे मूल्यवान् वस्तु ज्ञान होती है। संसार में वेद ज्ञान के प्राचीनतम वा आदि ग्रन्थ हैं। आज से लगभग 1.96 अरब वर्ष पूर्व सृष्टि की रचना होकर मानव की उत्पत्ति हुई थी। तभी ईश्वर ने आदि चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे सभी ऋषि आध्यात्मिक मनुष्य थे जो मन, वचन व कर्म से पवित्र होने के साथ त्याग भाव से जीवन व्यतीत करते थे। उनके अन्दर स्वार्थ भाव, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष व परिग्रह आदि की भावना नहीं होती थी। सभी पूर्ण व विशुद्ध शाकाहारी होते थे। वह पशुओं से भी उसी प्रकार प्रेम करते थे जैसे कि मनुष्यों से। ऋषियों का स्थान राजा से भी ऊपर होता था और सभी राजा व राजपुरुष ऋषियों का सम्मान करते थे। दलगत राजनीति का अस्तित्व उन

दिनों नहीं था। वेदानुसार ही राजा को शासन चलाना होता था। ऋषियों व प्रजाजनों का सारा समय या तो ईश्वर के ध्यान व चिन्तन में व्यतीत होता था या फिर देश व समाज के उत्थान वा कल्याण के कार्यों में। प्राचीन भारत ज्ञान विज्ञान सम्पन्न था। भौतिक सुख सुविधाओं को वह मनुष्य जीवन में सीमित महत्व देते थे। आजकल के विलासी लोगों की तरह उस समय के ऋषि व प्रजाजन नहीं थे। उसी परम्परा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी भी हुए। उन्होंने भी 14 वर्ष की अवस्था से ज्ञान प्रति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के लिए ही उन्होंने 21 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग कर दिया था। वह सच्चे व सिद्ध योगी बने और सन् 1863 में गुरु विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में उनका वेदादि शास्त्रों व व्याकरण ग्रन्थों का अध्ययन पूरा हुआ। इससे पूर्व का उनका जीवन भी पूर्णतः त्याग भाव का जीवन था और बाद का जीवन भी त्याग भाव के साथ देश की उन्नति सहित मनुष्यों को अज्ञान से छुड़ाकर सत्य ज्ञान को प्राप्त कराने में ही व्यतीत हुआ। उन्होंने ही लोगों को ईश्वर के सच्चे स्वरूप से परिचित कराया। उनसे पूर्व यह ज्ञान वेदादि सत्य ग्रन्थों में सीमित व बन्द था। संस्कृष्ट में होने से आम देशवासी इससे लाभ नहीं उठा सकते थे। स्वामी दयानन्द जी ने इसे पहली बार आम आदमी की बोलचाल की भाषा आर्यभाषा हिन्दी में प्रस्तुत कर संसार में एक बहुत बड़ी कान्ति की थी। जो ज्ञान हमारे बड़े-बड़े धर्माचार्यों को भी उपलब्ध नहीं था, वह महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों के द्वारा जनसामान्य तक पहुंचाया जो इन्हें पढ़कर धर्म, ईश्वर, आत्मा व सृष्टि को यथार्थ रूप से जान सके।

महर्षि दयानन्द श्रेष्ठ आदर्श पुरुष इस लिए थे कि उन्होंने जो भी कार्य किये वह प्रायः सभी अभूतपूर्व कार्य थे। उनके समय में स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। उन्होंने वेदों का प्रमाण देकर स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया। यह भी महाभारतकाल के बाद की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। इस अभूतकार्य के कारण भी वह आदर्श पुरुष

सिद्ध होते हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके समय में चारों वेद लुप्त प्रायः हो चुके थे। देश में उस समय तक पुस्तक व ग्रन्थ रूप में उनका प्रकाशन नहीं हुआ था। हस्तलिखित ग्रन्थ ही यत्र तत्र किन्हीं के पास सुरक्षित रहे होंगे। स्वामी जी ने उन्हें ढूँढ़ कर प्राप्त किया। दुःख की बात है कि जिस व्यक्ति से सम्भवतः ६ गौलपुर से उन्हें चार वेद मिले उसका ज्ञान भी हमें नहीं है। यदि उनके किसी शिष्य ने उनसे पूछ लिया होता तो आज हमें यह ज्ञात होता कि ऋषि दयानन्द को वेद उपलब्ध कराने वाले कौन महानुभाव थे। ऋषि दयानन्द की एक अन्य विशेषता यह थी कि वह वेदों के मर्मज्ञ व यथार्थ अर्थों को जानने वाले थे और उन्होंने इस ज्ञान को अपने तक सीमित न रखकर सर्वत्र प्रचार किया जिनसे ईसाई व मुस्लिमों सहित कोई भी व्यक्ति लाभान्वित हो सकता था वा हुए भी। महाभारत काल के बाद वेदों के सत्य अर्थ करने वाले विद्वान नहीं हुए, सायण व महीधर के जो भाष्य मिलते हैं उनके अनेक प्रकार से अनर्थ किया गया और वेदों के प्रामाणिक अर्थ न होकर लौकिक व यज्ञपरक अर्थ किये गये जिनसे वेदों का महत्व बढ़ने के स्थान पर घटा और जिसका लाभ अंग्रेजों ने भारत में ईसाईमत के प्रचार में किया। महर्षि दयानन्द ने वेदों के सत्य अर्थ करके उनकी योजना को विफल कर दिया था।

स्वामी दयानन्द जी के कुछ ग्रन्थों का उल्लेख हम कर चुके हैं। स्वामी दयानन्द जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नगर-नगर ग्राम-ग्राम घूम कर वेदों का प्रचार किया। स्वामी दयानन्द जी से पूर्व स्वामी शंकराचार्य जी हुए प्रन्तु उन्होंने वेदों पर न तो कोई ग्रन्थ ही लिखा और न वैसा प्रचार ही किया जैसा दयानन्द जी ने किया। हां, वह वैदिक धर्म व संस्कृति के अपने समय में बहुत बड़े रक्षक थे जिसके लिए यह देश उनका सदैव ऋणी है। स्वामी शंकराचार्य जी की कुछ भान्यतायें भी वेद व वैदिक परम्परा के विरुद्ध थी जिनमें से एक नारी जाति के प्रति उनके विचार थे। स्वामी दयानन्द जी ने अपनी दिव्य, ईश्वर प्रदत्त बौद्धिक व शारीरिक शक्ति का उपयोग कर आर्यजाति के पतन के कारणों पर भी विचार किया था। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि इसका कारण वेदों का अध्ययन व अध्यापन न होना था। इसके साथ अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जातिवाद, यथार्थ वर्णव्यवस्था का अव्यवहार व अप्रचलन, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित स्वयंवर विवाह का न होना, ब्रह्मचर्य-नाश, विषयासक्ति, सती प्रथा, पुराणों का प्रचार व व्यवहार तथा प्रक्षिप्त मनुस्मृति के अनेक अविद्यायुक्त कथन आदि थे।

इन सभी कारणों को दूर करने के लिए उन्होंने आन्दोलन किया जिसे उन्होंने वेद प्रचार का नाम दिया। देश की आजादी में भी प्रमुख भूमिका स्वामी दयानन्द जी की ही है। उन्होंने ही आजादी व स्वराज्य का मन्त्र दिया था। अंग्रेजों को उन्होंने यह कहकर ललकारा था कि यदि श्री कृष्ण जैसे वीर पुरुष होते तो अंग्रेज इस देश को छोड़कर भाग जाते। स्वामी दयानन्द ने देश व समाज को ईश्वर व जीवात्मा का सत्य स्वरूप बताया और उसकी उपासना की सरल व लाभकारी विधि बताई। यज्ञों के वैज्ञानिक पक्ष को सामने रखकर उन्होंने उसका प्रचार किया व उसे प्रत्येक गृहस्थी का दैनन्दिन कर्म घोषित किया। उन्होंने माता-पिता व आचार्य जनों की यथार्थ पूजा सहित देश भक्ति का स्वरूप भी अपने वचनों व ग्रन्थों के द्वारा प्रस्तुत किया है। शिक्षा पर उन्होंने सर्वाधिक बल दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि एक षडयन्त्र के द्वारा उनकी अल्पायु में मृत्यु होने पर भी उनके शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द और पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज और लाला लाजपत राय जी आदि ने गुरुकुल व दयानन्द वैदिक स्कूल के माध्यम से देशोत्थान का प्रशंसनीय कार्य किया।

स्वामी दयानन्द जी ने देश व समाज उत्थान के इतने कार्य किये कि जिनकी चर्चा करते जायें तो वह शायद समाप्त ही न हो। भारत में आद्यौगिक क्रांति का स्वप्न भी उन्होंने ही सर्वप्रथम देखा था व उसके लिए उन्होंने प्रयास भी किए थे। गोहत्या के लिए उन्होंने जनान्दोलन करने के साथ हिन्दी रक्षा व उसके सरकारी कार्यों में प्रयोग को लेकर भी उन्होंने अपूर्व जनान्दोलन आदि कार्य किये। संस्कृत व गुजराती का विद्वान होते हुए भी उन्होंने हिन्दी सीखी और अपने सभी ग्रन्थों को हिन्दी में उपलब्ध कराया। उनके यह ऐसे कार्य हैं जिनसे वह विश्व के सर्वश्रेष्ठ आदर्श महापुरुष सिद्ध होते हैं। उन्होंने किसी भी बात में अपने व पराये का पक्षपात नहीं किया। संसार व प्राणी मात्र के हित के लिए उन्होंने अपना जीवन आहूत किया। आज भारत विश्व में अध्यात्म के क्षेत्र में एकमात्र देश है जिसका श्रेय ईश्वर की सत्य उपासना व जीवात्मा का सत्य स्वरूप प्रस्तुत करने के कारण उन्हीं को है। योग व प्राणायाम आदि को भी उन्होंने ही अपने ग्रन्थों के माध्यम से प्रचारित किया। सन्ध्या योग का ही पर्याय है। उनका अपना शरीर भी स्वस्थ, आकर्षक, सुन्दर व अद्वितीय था। यह सभी बातें उन्हें विश्व का सर्वोच्च महामानव सिद्ध करते हैं। इसी के साथ हम इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

पता : १९६, चुखवाला-२, देहरादून-२४८००१

- आचार्य कर्मवीर

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक बड़ी सीख देने वाली रचना है। एक आदमी को रात में सपने में भगवान दिखाई दिए। उन्होंने उससे कहा कि जाओ अमुक जगह पर एक साधु रहता है, उससे मिलो और उसके पास एक हीरा है उसे ले लो। उस आदमी को लगा भगवान् की बात सही हो सकती है। इसलिए अगले दिन उसने सबेरे उठकर उनके बताए स्थान पर साधु की खोज की। संयोग से साधु मिल गए। उसने उन्हें सपने में भगवान के दर्शन देने और उनसे मिलकर हीरा लेने की बात बताई। साधु ने कहा- हाँ ठीक है। जाओ वहाँ नदी किनारे पेड़ के नीचे हीरा पड़ा है, उसे ले लो, आदमी वहाँ गया और उसके अचरज का ठिकाना ना रहा, जब उसने देखा कि पेड़ के नीचे सचमुच बड़ा कीमती हीरा पड़ा है। उसने हीरे को उठा लिया। खुशी से उसका दिल नाचने लगा।

अचानक उस आदमी के मन में विचार आया। साधु ने इसे यूँ ही क्यों डाल रखा है। जरूर उसके पास इस हीरे से भी मूल्यवान कोई चीज है, जिसने ऐसी अनमोल चीज को मिट्टी के मोल बना दिया है। यह हीरा तो आज है, कल नहीं। मुझे वही-चीज प्राप्त करनी है जो हीरा को भी ठीकरा कर देती है। इतना सोच वह हीरे को नदी में फेंक दिया और साधु के पास चला गया।

यह कहानी कवि की कोरी कल्पना नहीं है इसमें बहुत बड़ी सच्चाई है। जिसके पास धन से भी कीमती कोई दूसरी चीज होती है उसे धन फीका लगता है, किसी बुद्धिमान् ने ठीक ही लिखा है, जिसके पास केवल धन है उससे बढ़कर गरीब और कोई नहीं है, शास्त्रकार ने इसी बात को दूसरे ढंग से कही - “स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला” याने वह व्यक्ति दुनियाँ का महादरिद्र है जिसे हमेशा और-और की चाह बनी रहती है। एक महापुरुष सन्त हरिदास ने कहा था - मुझसे धनी कोई नहीं है क्योंकि मैं सिवा भगवान के और किसी का दास नहीं हूँ।

यह जानते हुए भी कि धन दौलत से इन्सान अधिक महत्वपूर्ण है, आज सभी समाजों में सभी देशों में पैसों का

बोलबाला है। अमेरिका के पास पैसे की कमी नहीं है, किन्तु उसकी प्यास नहीं बूझी वह और धन चाहता है। रूस के पास उतना पैसा नहीं है, लेकिन वह चाहता है कि उसके देशवासी खूब खुशहाल हों। यही हाल दूसरे बहुत से देशों का है। वे सब दिन रात पैसे की होड़ में दौड़ रहे हैं। जानते हैं इसका नतीजा क्या है? आज अमेरिका में ऐसे लोगों की संख्या में भारी वृद्धि देखी गई है, जिन्हें दवा लिए वगैर नींद नहीं आती। उनका जीवन नीरस हो गया है। सहजता का नामो निशान नहीं है। जिसके जीवन में उलझन है उतावलापन है भला उसे नींद कहां से आएगी। आज दुनियाँ हैरान इसलिए लगती है कि उसका मुँह दौलत की ओर है। यहां दौलत का मतलब सिर्फ रुपये-पैसे से ही नहीं, सुख सुविधा की बाहरी चीजों से भी है। ऐसी चीजों के पीछे पड़ने से आदमी को लगता है कि उसे कुछ मिल रहा है पर उसकी हालत वैसी ही होती है, जैसी कि रेगिस्तान में भ्रम से दीख पड़ने वाले पानी को देखकर हिरण की होती है, वह उसकी ओर दौड़ता है पर पानी हो तो मिले। बेचारा भटक-भटकर प्यासा ही प्राण दे देता है।

हम लिख चुके हैं कि संसार में जितने साधु सन्त महात्मा और बड़े लोग हुए हैं, उन्होंने धन से जो कीमती चीज है, उसे पाने की कोशिश की है। उन्होंने अपनी आत्मा को ऊँचा उठाया है, अपनी बुराईयों को दूर करने का प्रयत्न किया है और अपने सामने सदा ऊँचा उद्देश्य रखा है। सोचने की बात यह कि अगर पैसे में और पैसे के वैभव में ही सब कुछ होता है तो गौतम बुद्ध क्यों घर बार छोड़ते, महावीर क्यों राजपाट पर लात मारते, दयानन्द क्यों भरे पूरे घर से मुँह मोड़ते, महावीर और बुद्ध तो ढाई हजार साल पहले हुए दयानन्द तो अभी-अभी हुए, किन्तु उन्होंने बचपन से ही संसार की असारता समझ ली, मिथ्या आडम्बर को त्याग दिया और राष्ट्र जागरण का लक्ष्य लेकर निकल पड़े मैदान



में। याया वर की तरह घूमते हुए राजपूताने की धरती उदयपुर पहुंच जैसे ही उदयपुर के राणा को यह बात पता चली कि पहुंचा हुआ सन्त दयानन्द आया है झट बुला भेजा और उनके सामने प्रस्ताव रख दिया कि महाराज जी ! उदयपुर की करोड़ों की सम्पत्ति समर्पित है, भगवान एक लिंग की गद्दी को आप इसका मठाधीश बन जाइए, हम आपको शंकर जी का अवतार घोषित कर देंगे। आप भले ही मूर्ति पूजा न करें किन्तु उसका विरोध न करें, इस प्रस्ताव को सुनकर सन्त दयानन्द कहता है राणा तेरे राज्य को मैं एक दौड़ लगाकर पार कर सकता हूँ, किन्तु क्या मैं चाहकर भी परमात्मा के राज्य से बाहर हो सकता हूँ नहीं न। इसलिए नहीं चाहिए मझे यह धन सम्पत्ति मठ मन्दिर की जागीर। यह सुन राणा अवाक् रह गए। राणा ने आखरी बार कहा - महाराज जी सोच लीजिए आपको जिन्दगी में मुझ जैसा दानी कभी नहीं मिलेगा, सन्त दयानन्द ने भी कह दिया, राणा तुम्हें भी जिन्दगी में दयानन्द जैसा त्यागी कभी नहीं मिलेगा।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में लिखा है- “बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रंथन गावा” सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है विवेक है। संसार में जितनी ईजादे हुई हैं सब बुद्धि के बल पर हुई हैं। आप सबेरे दिल्ली में नाश्ता करके चलते हैं और दोपहर का खाना मास्को में खा लेते हैं। हजारों कि.मी. की यात्रा घंटों में हो जाती है। यह सब आदमी की बुद्धि से ही सम्भव हुआ है। जिसके पास इतनी बड़ी चीज है वह धन के या दुनियादारी की चीजों के पीछे भटके यह उचित नहीं है। बुद्धि का उपयोग उसे बराबर आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए, जिन्होंने ऐसा किया है उन्होंने मानवता की बड़ी सेवा की है। उनका नाम अमर हो गया है। आईये हम उसी धन को अर्जित करें।

जो मनुष्य जगत का जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

कविता :-

“मानव”

मर गया मानो मानव के अन्दर का मानव
यही इस संसारी के संसार का सार है
अजब विडम्बनाओं में पला इन्सान, हाथ में पानी है,
मर गया प्यासा यही उसकी कहानी है।

००

“अधर्म की नगरी से, अन्याय की डगरी से,
पाप के सागर से, अब तो गुनाहों का पहाड़ चढ़ा है
सूक्ष्म दर्शिता और दूरदर्शिता का बोध नहीं जिसमें
सिद्धि स्वार्थ का हट हो जिसमें,
अब इन्सान का वो जिस्म हुआ है,
अधर्म पाखण्ड में बंटकर ना जाने
कितना किस्म हुआ है ॥”

०००

जिसको खुदा न सका बांट, उसे इन्सान चला है,
धरा बटा है और मजहबों में इन्सान बंटा है
छिन ली जिसने जल से जल की शीतलता
बाटी हो जिसने माँ से माँ की ममता
फिर भी छद्म शक्ति शाली को न कोई गम है
क्या इनकी शक्ति खुदा से कम है ?

००००

“मनुज है तुला हर चीज हराने को,
जीतकर सूर्य सा चमक, चांद सा सुन्दर
प्रकृति सा मधुवन पाने को,
पा ली उसने हर चीज,
हराकर अवरोध को,
वही मनुज वीर है,
जिसने हराया हो क्रोध को।”

- अनिल कुमार आर्य, आर्यसमाज दुर्ग (छ.ग.)

मनुष्य स्वभाव से ही उत्सव-प्रिय प्राणी है। “उत्सव प्रिया: मानवा:” यह महाकवि कालिदास ने भी कहा है। वह अपने जीवन का प्रत्येक क्षण आनन्द एवं सुख में बिताना चाहता है। त्यौहार मानव के इसी हर्षोल्लास की भावना के परिचायक हैं। त्यौहारों से मानव जीवन की उदासी और निराशा दूर हो जाती है और मन में एक नया उत्साह व नयी उमंग भर जाती है। हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौहारों में होली रंग और उमंग का अनुपम पर्व है। यह उत्सव शीतकाल की समाप्ति और बसन्त के आगमन पर फाल्गुन मास की पूर्णिमा को उल्लास और उत्साह से मनाया जाता है। होलिकोत्सव का प्रारंभ यद्यपि अष्टमी से हो जाता है, तो भी दो दिन इसके विशेष होते हैं। पूर्णिमा को होलिका दहन होता है और दूसरे दिन-चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को रंग (फाग) खेला जाता है।

यह उत्सव क्यों मनाया जाता है? इस सम्बन्ध में अनेक मत हैं, पर मुख्य मत यह है कि यह ऋतु पर्व है। भारत में बसन्त एक बहुत सुहानी ऋतु होती है। जो प्रकृति में विकास और उमंग का एक भाव भर देती है। इन दिनों लता-पादपों पर नई-नई कोपलें आ जाती हैं। वनों-उपवनों में रंग-बिरंगे फूल उद्वेलित करने लगते हैं। सरसों के फूलों की पीली साड़ी पहने धरती भी मन को हरती है। जिसमें लोगों मनो में एक नई उमंग और नये जीवन का आनन्द छा जाता है। होली के आगमन से समाज के ऊँच-नीच का भाव एक दूसरे के बीच मिलने के लिए लालायित हो उठते हैं। होली का रंग सभी के हृदयों से मनोमालिन्य को दूर कर देता है। इसे सभी एक होकर बड़े चाव से मनाते हैं।

होली का दूसरा दिन “दुलैंडी” कहलाता है। इस दिन खूब राग-रंग होता है। बालक, युवक, वृद्ध और नारियां प्रातः ही रंग की पिचकारियां और गुलाल लिए निकल पड़ते हैं और सब प्रकार का भेद-भाव भूलकर एक दूसरे पर रंग डालकर और गुलाल लगाकर हर्ष प्रकट करते हैं। इस अवसर

पर ऊँच नीच की, स्त्री-पुरुष की छोटे-बड़े की समस्त वर्जनाएं त्याग दी जाती हैं। रंग खेलते हुए लोग परस्पर गले मिलते हैं तथा स्नेह सम्बन्ध की मिठाईयाँ बंटती हैं। प्रीति-भोज होते हैं। इस दिन शत्रु भी अपनी शत्रुता भुलाकर आपस में एक दूसरे के गले लग जाते हैं। जीवन में एक बार फिर नई आशाएँ, नई उमंगें छा जाती हैं। इस अवसर पर बजने वाले ढोलक, करताल, झांझ और मंजीरों की मधुर-मंद्र ध्वनि उन्हीं-उमंगों को प्रकट करती हैं। होली की इस उमंग ने भक्तों के हृदय को भी तरंगित किया। तभी तो मीराबाई ने कहा है-

फागुन के दिन चार होली खेल मना रे
सील सन्तोष की केसर घोली प्रेम प्रीति पिचकार रे ॥
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर बरसत रंग अपार रे ॥

कुछ लोग इस शुभ दिन, गांजा, भांग, सुलफा तथा शराब पीते हैं, परन्तु यह न तो शुभ है और न हर्ष मनाने का उचित ढंग ही। होली भारतीय संस्कृति का एक पवित्र त्यौहार है। अतः हमें इस दिन को एक पवित्र, मंगलमय और आनन्दमय त्यौहार के रूप में ही मनाना चाहिए।

पता : गांधी चौक, सुपेला भिलाई

दयानन्द तेरी कृपा

तेरी दीवानगी देखी है, हमने ऐ दयानन्द ।
उस वक्त ज्ञान का प्रकाश था यहां मन्द-मन्द ॥
देश के कोने-कोने में, दानवता का राज था ।
फिर भी तेरे दिल में आर्यावर्त के लिये रामराज था ॥
तू निडर था, एक अकेला आर्यवीर था ।
जिसने तेरा साथ पाया वो प्रभावित जरूर था ॥
स्वर्ग की भांति आर्यावर्त को तू ने सजाया था ।
वेदों में ईश्वर का असली रूप पाया था ॥
कर सत्यार्थ-प्रकाश की रचना तूने ।
अज्ञान का तम सारा मिटाया था ॥

- ऋषि कुमार आर्य, ग्राम-रिहाबली, पो.-तारौलीगूजर,
तह.-फतेहाबाद, जनपद आगरा (उ.प्र.) २८३११९



६ मार्च
पुण्य तिथि
पर विशेष

धर्मवीर पंडित लेखराम

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

ऋषियों, महात्माओं तथा महापुरुषों की पवित्र जीवियों का अवलोकन करने से भलीभांति विदित होता है कि उनका जीवन सफल था। सफल जीवन के लिए जिन उत्तम साधनों की परमावश्यकता प्रतीत होती है वह सब पूर्ण रूपेण उनके जीवन में सम्यक्ता उपलब्ध होते हैं।

वैदिक धर्म के प्रति अनन्य निष्ठा रखकर धर्म प्रचार, लेखन, शास्त्रार्थ, शुद्धि तथा विविध कार्यों में जीवन समर्पित कर देने वाले पं. लेखराम जैसे धर्मवीर, आर्य जाति के इतिहास में बहुत कम देखने में आते हैं। इनका जन्म १९१५ विक्रमी में जेहलम जिले के एक ग्राम सय्यदपुर में महता तारासिंह नामक ब्राह्मण के यहां हुआ।

बाल्यकाल में उनका अध्ययन फारसी तथा उर्दू के माध्यम से हुआ। यही भाषाएँ उन दिनों पंजाब में पढ़ाई जाती थीं। सामान्य शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। इन्हीं दिनों इनका झुकाव धर्म एवं अध्यात्म की ओर हुआ। वे गीता का नियमित पाठ करते तथा अद्वैतवाद की दार्शनिक विचारधारा का लगातार चिन्तन करते। उन्हें पंजाब के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी विचारक मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों को पढ़ने का भी अवसर मिला। फलतः उनके विचारों में परिवर्तन आया। अब वे ऋषि दयानन्द की विचारधारा से परिचित हुए। १९३७ वि. में पेशावर में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी। अब उन्हें वैदिक धर्म के विषय में अधिक जानने की इच्छा हुई एक मास का अवकाश लेकर वे ऋषि दयानन्द से भेंट करने के लिए अजमेर जा पहुंचे। उन्होंने स्वामी जी के चरणों में सिर नवाया और अनेक जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की। जब स्वामी जी महाराज ने इस युवक के सभी प्रश्नों का सम्मानजनक उत्तर दे दिया, तब पं. लेखराम संतुष्ट मन से स्वस्थान पर लौट आए। स्वामीजी ने इस समय उनसे यह भी प्रतिज्ञा कराई कि पच्चीस वर्ष से पूर्व वे हरगिज विवाह नहीं करेंगे। पं. लेखराम ने गुरुवर के इस आदेश को निभाया।

पं. लेखराम अब सर्वात्मना धर्मप्रचार में जुट गए। उन्होंने धर्मोपदेश नामक एक उर्दू मासिक निकाला। उसमें उच्च कोटि के लेख लिखने लगे। उन दिनों पंजाब में मुसलमानों के एक नये फिर्के अहमदिया सम्प्रदाय (कादियानी) का जोर था। इसके संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद स्वयं को पैगम्बर बताने लगे थे। उनके अनुयायियों की संख्या भी बढ़ रही थी। यद्यपि पं. लेखराम पुलिस सेवा में रहते हुए भी धर्मप्रचार के लिए पर्याप्त समय देते थे, किन्तु १९४० वि. में स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् उन्होंने अनुभव किया कि अब सरकारी नौकरी और धर्मप्रचार दोनों साथ साथ नहीं चल सकते। अतः उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और धर्मोपदेश को ही अपने जीवन का एकमेव लक्ष्य बनाया।

पं. लेखराम ने अहमदिया सम्प्रदाय और उसके स्वयंभु पैगम्बर को आलोचना का लक्ष्य बनाया। इस सम्प्रदाय की मान्यताओं के खण्डन में उन्होंने अनेक ग्रन्थ निकाले। 'तकजीब बुराहीन अहमदिया' और 'नुस्खा खब्त अहमदिया' आदि पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई। मुसलमानों ने भी कादियानियों की मिथ्या बातों तथा कपोल कल्पनाओं को समझना आरम्भ किया।

जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विधिवत गठन हुई तो पं. लेखराम उसके उपदेशक बन गए। सभी की ओर से विभिन्न स्थानों पर प्रचारार्थ जाने लगे। उनकी प्रवृत्तियां बहुआयामी थीं। उन्होंने 'आर्यगजट' का सम्पादन किया। विधर्मियों से शास्त्रार्थ किये, हिन्दू धर्म को छोड़कर या इस्लाम ग्रहण करने वालों को स्वधर्म में रहने के लिए मनाया। जहां जहां से उन्हें प्रचारार्थ बुलाया गया, वहां वहां जाकर उन्होंने

लोगों को वैदिक धर्म के तत्वों को समझाया।

इनके अतिरिक्त पं. लेखराम सुयोग्य लेखक भी थे। उन्होंने भारतीय इतिहास, ईसाई तथा इस्लाम धर्म के मूल तत्वों तथा मान्यताओं का विशद अध्ययन किया था, सैमेटिक मतों के मान्य ग्रन्थों का गम्भीर अनुशीलन किया था। इन मतों के वे अधिकृत विद्वान् समझे जाते थे। इसी बीच आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने एक प्रस्ताव स्वीकार कर, ऋषि दयानन्द का विस्तृत एवं प्रामाणिक जीवन चरित्र लिखवाने का निश्चय किया। इस कार्य को आरम्भ करने के पूर्व यह आवश्यक कि ऋषि जीवन विषयक सभी तथ्यों एवं जानकारीयों को एकत्र किया जाता। यह गुरुवर कार्य पं. लेखराम के ही सुपुर्द किया गया। सभा के आदेश को शिरोधार्य कर पं. लेखराम जी स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित सामग्री का संकलन करने के लिए देश के विभिन्न भागों में गए। प्रत्यक्षदर्शियों से मिलकर, आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करने के अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि पत्रों में प्रकाशित ऋषि दयानन्द सम्बन्धी संदर्भ सूचनाओं तथा लेखों को भी एकत्र किया।

इस बहुत संग्रह कार्य को पूरा करने के पश्चात् वे लाहौर आए और जीवनी लेखन का कार्य आरम्भ किया। यह दुर्भाग्य ही था कि असमय में बलिदान मार्ग को पथिक बन जाने के कारण, पं. लेखराम की लौह लेखनी से, आचार्यप्रवर का वह विशद जीवनचरित नहीं लिखा जा सका। कालान्तर में पंजाब सभा के प्रधान लाला मुन्शीराम के आदेश से पं. आत्माराम अमृतसरी ने पं. लेखराम द्वारा संगृहीत सामग्री के आधार पर ही इस वृहद् ग्रन्थ को उर्दू में लिखकर पूरा किया।

१९५० विक्रमी में जब उनकी आयु ३५ वर्ष की थी, उन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया और कुमारी लक्ष्मी को अपनी सहधर्मिणी बनाया। उनके एक पुत्र हुआ जो अधिक आयु नहीं पा सका। पं. लेखराम की यह विशेषता थी कि जहां और जिस समय उनकी परिस्थिति की आवश्यकता महसूस की जाती वे अन्य सभी कामों को छोड़कर वहां पहुंच जाते। ऐसा करते समय उन्हें न तो निजी सुविधाओं की ही चिन्ता रहती, न वे यात्रा की कठिनाइयों

का ही ख्याल करते। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि जोधपुर के प्रशासक महाराजा प्रतापसिंह, स्वामी दयानन्द के आद्य शिष्य पं. भीमसेन शर्मा को अपने यहां बुलाकर मांस भक्षण के समर्थन में उनसे कोई व्यवस्था लिखवाना चाहते हैं, तब पं. लेखराम अविलम्ब जोधपुर पहुंचे। उन्होंने पं. भीमसेन को स्पष्ट कह दिया कि यदि उसने लोभ या दबाव में आकर मांस के समर्थन में कोई व्यवस्था दे दी, तो उसे आर्यसमाज की वेदी पर खड़े होने से भी वंचित कर दिया जाएगा और उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिल जायेगी।

बूंदी में जब आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द का पौराणिक विद्वानों से शास्त्रार्थ होने लगा, तब उनकी सहायता के लिए पण्डितजी को भेजा गया। इस अवसर पर उन्होंने भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर कस्बे में, मुहम्मदी मत की आलोचना में एक तर्कपूर्ण व्याख्यान किया। साधु केशवानन्द नामक एक पौराणिक साधु से शास्त्रार्थ करने के लिए वे हिमाचल प्रदेश के नाहन नगर में गए और वहां पर आर्यसमाज की स्थापना की।

स्वधर्म को त्यागकर, किसी अन्य मत की दीक्षा लेने के लिए तत्पर लोगों को बचाने के लिए पं. लेखराम सदा सजग रहते थे। जब उन्हें पता चला कि पटियाला रियासत के एक गांव पायल में कोई हिन्दु अपना मत त्यागकर अन्य मत में दीक्षित हो रहा है, तो वे बिना इस बात का विचार किये कि अमुक रेलगाड़ी उस स्टेशन (बाबा पायल) पर ठहरती भी है या नहीं, द्रुतगति रेल में सवार हो गए। जब गाड़ी पायल स्टेशन होकर गुजरने लगी तो लेखराम ने अपना बिस्तर चलती गाड़ी से बाहर फेंका और स्वयं भी कूद गए। उन्हें इस बात की थोड़ी भी चिन्ता नहीं हुई कि उनके शरीर को क्षति पहुंची है। वे तुरन्त स्वधर्म त्याग के लिए तत्पर उस व्यक्ति के निकट पहुंच गए और उससे पूछने लगे कि उसने क्या सोचकर धर्म परिवर्तन का निश्चय किया है? जब उक्त व्यक्ति को पता चला कि पं. लेखराम तो अपने शरीर पर चोटों को झेलकर केवल उसे बचाने के लिए ही आए हैं, तब उसने परमत-प्रवेश का अपना संकल्प त्याग दिया।

पं. लेखराम जितने उत्तम वक्ता उपदेशक और

शास्त्रार्थकर्ता थे उसी भांति उच्च कोटि के लेखक भी थे। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या ३३ है, जो कुलियात आर्य मुसाफिर नामक वृहद ग्रन्थ में संग्रहित है। इनके एकाधिक अनुवाद हिन्दी में भी हुए हैं। जब १८९७ के वर्ष में पं. लेखराम लाहौर में अपने निवास में रहकर दयानन्द जीवन लेखन का कार्य कर रहे थे, उनके प्राणहरण की चेष्टा सफल हुई। जब वे दिन भर के लेखन कार्य से थककर अंगड़ाई लेते हुए उठे, तो एक काले गठीले तथा हिंसक प्रवृत्ति के पुरुष ने उनकी छाती तथा पेट में छुरे से घातक प्रहार किये। इस आकस्मिक प्रहार से पं. लेखराम के शरीर से खून की धाराएं बह निकली, अंतड़ियां भी बाहर आ गई। उन्हें तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया।

जीवन के इन अंतिम क्षणों में भी ईश्वर-विश्वासी

लेखराम परमपिता का निरन्तर स्मरण करते रहे। उस समय आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता लाला मुन्शीराम भी उनकी मृत्यु शैया के निकट उपस्थित थे। इस समय अमर हुतात्मा श्री लेखराम ने आर्यजाति को अपना अन्तिम संदेश देते हुए कहा कि आर्यसमाज में तहरीर (लेखन) तथा तकरीर (व्याख्यान) का काम कभी बंद नहीं होना चाहिए।

मर्म स्थलों पर लगे प्रहारों ने उनके जीवन की आशा को समाप्त कर दिया। ६ मार्च १८९७ की रात्रि को इस अमर धर्मवीर का धर्म की वेदी पर बलिदान हो गया। धर्म और सत्य के लिए स्वयं को होम देने वाले पं. लेखराम जैसे सर्वस्य स्वामी पुरुष ही मानवता के प्रकाश स्तम्भ है।

—: कविता :—

“मैं हूँ दयानन्द”

रचयिता : डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री,
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरियाणा)

दुष्टों की आंधियों को जड़ से मिटा दो।
भारत वतन को फिर से स्वर्ग बना दो।
ऋषियों के पथपर चलना पड़ेगा।
वैदिक धर्म के लिये मिटना पड़ेगा।
मैं सूरज की तरह आगे बढ़ता रहूंगा।
स्वधर्म की रक्षा करता रहूंगा।
मैं अपने मन को सदा पुनीत रखता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ ॥१०॥
नॉर्थ बुक से स्वामी दयानन्द बोले,
तेरा शासन स्वीकार नहीं है।
सत्य का पुजारी हूँ सत्य ही कहूंगा,
तुझे रहने का अधिकार नहीं है॥
यह भारत वतन ऋषियों-मुनियों का है।
पतंजलि गौतम और कवियों का है॥
बुरों का नतीजा बुरा ही मिलता है।
टूटा हुआ सुमन कभी नहीं खिलता है।
दयानन्द ने कभी झुकना न जाना।
ईश्वर के सिवा किसी को माना,
हमारे देश को छोड़ना पड़ेगा।

आज न कल लन्दन जाना पड़ेगा।
ऋषियों के पथपर मैं चलता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ ॥११॥
वेद पढ़ने का अधिकार मैंने दिया।
वेद के पथपर चलना मैंने सिखाया।
वेद है ईश्वरवाणी, मैंने बताया।
ज्ञान के पुष्पों से जगत को सजाया॥
मेरा जन्म धर्म के लिये हुआ है।
अंतिम समय में सांसे गिन रहा हूँ।
हे आर्यों! तुमसे यही कह रहा हूँ॥
वैदिक धर्म कभी मिटने न पाये।
संध्या यज्ञ कभी छूटने न पाये॥
घर घर में संध्या हवन रचा देना।
फिर से भारत को आर्यावर्त्त बना देना॥
अब मैं दुनियां से चला जा रहा हूँ।
बचाये रखना वतन को बताये जा रहा हूँ॥
अब मैं इस संसार से चलता हूँ।
वैदिक धर्म की खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ ॥१२॥

-- शेष अगले अंक में

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६



आजकल एलर्जी शब्द बहुत ही प्रचलित हो गया है। जिस किसी को आठ-दस दिन बुखार, नजला, खांसी, आंखों से पानी निकलना उसे एलर्जी का शिकार कहा जाता है। रोगी बड़े ही शान से कहता है डॉक्टर साहब कहते हैं आपको एलर्जी हो गयी है। एलर्जी क्या है? होमियोपैथी का इस विषय में क्या विचार है? होमियोपैथी में लक्षणानुसार एलर्जी की दवा दी जाती है, होमियो चिकित्सा आकस्मिक एलर्जी एवं जीर्ण एलर्जी दोनों के लिए प्रभावकारी सिद्ध हुई है।

एलर्जी का क्या रूप है ?

१. ऐसा क्यों होता है कि मिस्टर ए एयरकंडीशंड कमरे में आते ही छींकना शुरू कर देते हैं ?
२. ऐसा क्यों होता है कि मिसेस बी जबभी स्ट्रबेरी फ्लेवर वाला आइसक्रीम खाती है तो अचानक रात में उठकर उन्हें सांस लेनी पड़ती है ?
३. ऐसा क्यों होता है कि मिसेस सी को फलों की खुशबू से सांस लेने में तकलीफ होने लगती है ? अतः ऐसे मरीजों के लिए होमियोपैथ कई प्रकार से चिकित्सा करते हैं।

उदाहरणार्थ :- यदि कोई पदार्थ, किसी स्वस्थ व्यक्ति में एलर्जी किसी भी तरह की पैदा करने में सक्षम हो, तो उसी पदार्थको शक्ति कृत करके औषधि बनाई जाती है एवं उसी प्रकार के लक्षण मिलने पर उपचार किया जाता है।

साधारणतः एलर्जी निम्न प्रकार की होती है -

१. श्वसन तंत्र की एलर्जी :- यह एक प्रकार का मौसमी रोग है जिसमें प्रथमावस्था में सर्दी जुकाम हो जाता है आँख एवं नाक से पानी बहता है, छींके आती रहती है, आँखों में जलन होती है श्वास लेने में अत्यधिक कष्ट होता है, अस्थमा का प्रभाव मध्य रात्रि को अधिक होता है यह वंशानुगत भी हो सकता है। वायु प्रदूषण भी अस्थमेटिक एलर्जी का मुख्य स्रोत है। इसमें नाक धीरे-धीरे टपकने लगती है, गला बैठ जाता है।

प्रमुख होमियो औषधियाँ :- एलियम सीपा, आर्सेनिक एल्बा, सल्फ्यूरिक एसिड, डुलकामारा, मर्कसाल आदि है।

खाने के पदार्थों की एलर्जी :- होमियो औषधियाँ खाने के द्वारा उत्पन्न होने वाली एलर्जी में भी बहुत प्रभावकारी सिद्ध हुई है। व्यक्तिकरण से सिद्धान्त पर प्रमुख औषधियाँ दी जाती है। जैसे किसी एक व्यक्ति को मक्खन, गोभी, चर्बीदार चीजें, मांस, केक, प्रोटीन एवं अधिक तेल व घी से बने पदार्थों से तकलीफ होना। दूध पीने से पित्त उछल जाना, अण्डा एवं पके हुए मांस खाने पर एलर्जी चीनी या केन शुगर से एलर्जी आर्टीकेरिया, चमड़ी लाल हो जाती है जिसमें जलन व खुजली होती है। यह शरीर के किसी भी हिस्से पर हो सकती है।

प्रमुख औषधियाँ :- पल्साटिला, आर्टिका यूरेन्स, फेरममेट, सल्पर, एपिस मेल आदि।

मौसम संबंधी एलर्जी :- कभी कभी अचानक मानसून आ जाता है और व्यक्ति मौसम बदलने के कारण कुछ रोगों के शिकार हो जाते हैं। यह मौसम जन्य एलर्जी है। इस प्रकार की एलर्जी कोई विशेष रोग नहीं है, किसी खाद्य पदार्थ या ऋतु एवं मौसम का अनुकूल न बैठना ही एलर्जी कहा जाता है, और होमियोपैथी में लक्षणानुसार उसका उपचार करना ही एलर्जी का उपचार है।

प्रमुख औषधियाँ :- डुलकामारा, कार्वोबेज, नक्स बेमिका, फेरममेट रसटाक्स आदि।

त्वचा संबंधी एलर्जी :- कई लोग त्वचा के रोगों को मरहम लगाकर दबा देते हैं। इनके दबने से किसी को दमा, किसी को कोई और रोग हो जाते हैं। इस प्रकार त्वचा के रोगी को दवा देने से किसी को एक्जिमा, किसी में आर्टीकेरिया, पित्ती उछलना आदि रोग हो जाते हैं। यह बात निश्चित है कि होमियोपैथिक चिकित्सा द्वारा किसी भी प्रकार की एलर्जी का लक्षणों के आधार पर इलाज किया जा सकता है। यह चिकित्सा पद्धति ऐसी है जिससे रोग से पूर्ण रूपेण से छुटकारा पाया जा सकता है। कई रोगी मेरे उपचार से ठीक हो गये हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

गुरुकुल कालवा में आचार्य बलदेव स्मृति दिवस सम्पन्न

कालवा (हरियाणा)। स्मृति शेष आचार्य बलदेव जी महाराज का प्रथम पुण्य तिथि गुरुकुल आश्रम कालवा, जिला-जिन्द (हरियाणा) दिनांक २८ जनवरी २०१७ को अपार जनसमूह की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। मंच में लगभग ५० संन्यासी एवं आर्य नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। कृषि मंत्री हरियाणा प्रदेश ने आचार्य जी को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि देते हुए शासकीय कोष से पांच लाख रुपये की सहायता की घोषणा किया। दयानन्द मठ दीनानगर एवं गुरुकुल झज्जर के प्रभारी एवं प्रतिनिधिगण आचार्य बलदेव जी की स्मृति में अपने संस्मरण सुनाते हुए भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित किये। कार्यक्रम का संचालन स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती (करनाल) द्वारा बहुत ओजस्वीपूर्ण वक्तव्य के साथ संचालन किया गया।

प्रातः १० बजे से ११ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् प्रातः ११ से अपरान्ह ३ बजे तक आचार्य बलदेव स्मृति दिवस का कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किया गया। सभा से प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, मंत्री आर्य दीनानाथ वर्मा, उपमंत्री चतुर्भुज कुमार जी आर्य कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। आचार्य अंशुदेव जी को गुरुवर बलदेव जी की स्मृति में बोलने को आदेशित किया गया। उन्होंने बड़े ही प्रभावशाली वक्तव्य देते हुए यह कहा - “जिन्न उनका ही होता है, जो सौदा सिर का करते हैं, वही कुछ कर गुजरते हैं, कफन बाँधे जो फिरते हैं ॥” आचार्य बलदेव जी के उत्तराधिकारी आचार्य राजेन्द्र द्वारा आमंत्रित विद्वान्, अतिथि, संन्यासी एवं आर्य कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया और स्मृति चिन्ह भी प्रमाण पत्र के रूप में प्रदान किया गया।

- कार्यक्रम से लौटकर श्री दीनानाथ वर्मा, मंत्री

आर्यसमाज मंदिर सिरपुर का भूमिपूजन शिलान्यास सम्पन्न

सिरपुर। आर्यसमाज सिरपुर (बलौदा, सराईपाली) में दिनांक ११ फरवरी २०१७ को भूमिपूजन एवं शिलान्यास सभा के सौजन्य से सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

प्रातः ११ बजे से दोप. ३ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव द्वारा सुमधुर भजन संगीतमय यज्ञ कार्य सम्पन्न हुआ। मंच में आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री एवं मुकेश शास्त्री उपस्थित रहे। दुर्ग से पधारे श्री पिंकू द्वारा आर्गन, श्री दुर्गाप्रसाद द्वारा आक्टोपेड और श्री सन्नी द्वारा ढोलक वादन का संगतिकरण के साथ आचार्य अंशुदेव आर्य का कर्णप्रिय हृदयग्राही भजन अत्यन्त आकर्षक रहा। लगभग १००० अबाल वृद्ध नर-नारियों की उपस्थिति में कार्यक्रम सफल रहा। रात्रि ९ बजे से ११ बजे तक पुनः भजनोपदेश कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ग्राम सिरपुर के श्रद्धालु श्रोतागण उपस्थित रहे।

आर्यसमाज बड़ेपन्धी से श्री आनन्द कुमार आर्य के नेतृत्व में ७० आर्यजनों की उपस्थिति रही। श्री चतुर्भुज आर्य के नेतृत्व में ग्राम नानकसागर आर्यसमाज से लगभग

२० आर्यजनों की उपस्थिति रही।

आर्यसमाज पोड़ागढ़ से श्री बिरंजीलाल बगर्ती द्वारा ११०० रुपये आर्यसमाज मंदिर निर्माण एवं श्रीमती हरिप्रिया पत्नी श्री प्रेमप्रकाश शास्त्री द्वारा ५१०० रुपये दान प्राप्त हुआ। श्री रणजीत भोई द्वारा १५ डि.मी. भूमि जमीन मेन रोड से लगा हुआ ग्राम सिरपुर में दान किया गया है, जिसमें शिलान्यास एवं भूमिपूजन कार्यक्रम हुआ। दानदाता दम्पति का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सभा से मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे। अंत में ऋषिलिंगर का कार्यक्रम हुआ।

संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री

आर्यसमाज रावतभाठा का स्वर्ण जयन्ती समारोह धूमधाम से सम्पन्न

रावतभाठा। आर्यसमाज रावतभाठा का स्वर्ण जयन्ती समारोह दि. ११ व १२ फरवरी २०१७ को सोल्लास मनाया गया। इस आयोजन की सभी लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

महिला आर्यसमाज जवाहरनगर रायपुर में ऋग्वेद महायज्ञ सम्पन्न

रायपुर। महिला आर्यसमाज जवाहर नगर में दिनांक १ से ५ फरवरी २०१७ तक ऋग्वेद महायज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें आमंत्रित विद्वान् स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (गुरुकुल आश्रम आमसेना), आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा), पं. कुलदीप विद्यार्थी एवं सहयोगी प्रसिद्ध भजनोपदेशक बिजनौर उ.प्र., पं. नन्द कुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक सतना म.प्र., पं. संजय शास्त्री म.द.से. टाटीबन्ध रायपुर, पं. सूरज आर्य धर्माचार्य आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, पं. सुशील स्वामी पुणेहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य यजमान के रूप में श्रीमती डोडेजा एवं श्री नंदलाल डोडेजा, श्रीमती जया खेमका एवं श्री अजय खेमका, श्रीमती लक्खीचंद एवं श्री हेमराज लक्खीचंद, श्रीमती सुनीता गुप्ता एवं श्री अरुण कुमार गुप्ता, श्रीमती मीना एवं श्री शिवन प्रसाद आर्य उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, आर्यसमाज कटोरातालाब रायपुर, महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर, आर्यसमाज संतोषीनगर रायपुर एवं समस्त शिक्षण संस्थाओं का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। विशेष कर श्री दयाराम वर्मा, सभा उपप्रधान एवं प्रधान आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर एवं पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम के संयोजन एवं संचालन में श्रीमती मंजू अशपल्या मंत्राणी महिला आर्यसमाज तथा प्रधाना श्रीमती रामेश्वरी देवी, श्रीमती सुशीलामाता जी, श्रीमती राज खेमका, श्रीमती तारामाता जी, श्रीमती अर्चना मांगला, श्रीमती स्नेही प्रभादेवी, श्रीमती अल्का उप्पल, श्रीमती शोभा खंडेलवाल एवं श्रीमती डॉली ग्रोवर आदि का विशेष योगदान रहा। - संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री

आर्यसमाज मरौद में विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

मरौद (धमतरी)। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के सहयोग से आर्यसमाज मरौद में दिनांक ६ से ८ फरवरी २०१७ तक जानकी देवी आर्य विद्यालय मरौद (धमतरी) में, विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनांक ६ फरवरी २०१७ को प्रातः ९ बजे से १२ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा) के ब्रह्मत्व में तत्पश्चात् यज्ञ, भजन व प्रवचन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सायं ३ से ५ बजे तक भजन-व प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आमंत्रित विद्वान् के रूप में आचार्य कर्मवीर शास्त्री (सम्पादक अग्निदूत) दुर्ग, पं. कुलदीप विद्यार्थी एवं सहयोगी प्रसिद्ध भजनोपदेशक बिजनौर उ.प्र., पं. नन्द कुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक सतना म.प्र., पं. सूरज आर्य धर्माचार्य आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर उपस्थित रहे। दिनांक ७ फरवरी २०१७ को दोप. २ से ३.३० बजे तक जानकी देवी आर्य विद्यालय मरौद एवं श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन मानिकपुरी मैडम द्वारा कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान श्री सोमप्रकाश गिरी, श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य सहित सभा के पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे। तीनों दिन ऋषि लंगर श्री सोमप्रकाश गिरी के सौजन्य से उनके गृह ग्राम मरौद में सम्पन्न हुआ। - संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग में महर्षि दयानन्द जन्म, महाशिवरात्रि पर्व व बोध दिवस सम्पन्न

दुर्ग। आर्यसमाज मठपारा दुर्ग के स्वामी श्रद्धानन्द सभा भवन में महर्षि दयानन्द जन्म, महाशिवरात्रि पर्व व बोध दिवस धूमधाम से मनाया गया, जिसमें सर्वप्रथम पावन यज्ञ किया गया तथा सभागार में सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भजन व प्रवचन प्रस्तुत किये गये। भजन व प्रवचन की श्रृंखला में महर्षि दयानन्द के जन्म व बोध दिवस पर विशेष-चर्चा किया गया। इस अवसर पर पं. सेवकराम आर्य, श्रीमती लक्ष्मी दुबे, अनिता तलवार, रेखा सालुंके, अंबिका सोनी आदि ने भजन प्रस्तुत किये। आचार्य लोकनाथ शास्त्री जी ने अपना विचार महर्षि दयानन्द के ऊपर प्रस्तुत किये। सभागार में आर्यसमाज के समस्त अधिकारी व सदस्यगण उपस्थित रहे। आर्यसमाज के प्रधान श्री विनोद बिहारी सक्सेना, मंत्री विनीत श्रीवास्तव, संतोष शर्मा, सुजीत खरे, ईश्वरी अग्रवाल, सारिका सुरे, भारती राजपूत, संगीता देवांगन, जी.एस. ठाकुर, राजेन्द्र देवांगन, उमेश शर्मा, अनिल अग्रवाल मेघमाला मिश्रा आदि उपस्थित रहे। अंत में शान्तिपाठ व जयघोष के द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। - संवाददाता - संतोष शर्मा, मंत्री आर्यसमाज मठपारा दुर्ग

ग्राम भैंसबोड़ में विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

भैंसबोड़ (धमतरी)। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के सहयोग से सांस्कृतिक मंच भैंसबोड़ (धमतरी) में दिनांक ९ व १० फरवरी २०१७ में विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रातः ९ बजे से १२ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा) के ब्रह्मत्व में हुआ, तत्पश्चात् यज्ञ, भजन व प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सायं ३ से ५ बजे तक भजन व प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आमंत्रित विद्वान् के रूप में आचार्य कर्मवीर शास्त्री (सम्पादक अग्निदूत) दुर्ग, पं. कुलदीप विद्यार्थी एवं सहयोगी प्रसिद्ध भजनोपदेशक बिजनौर उ.प्र., पं. नन्द कुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक सतना म.प्र., पं. सूरज आर्य धर्माचार्य आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर उपस्थित रहे। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान श्री सोमप्रकाश गिरी, श्री दयाराम वर्मा, प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य सहित सभा के पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे। ऋषि लंगर श्री सोमप्रकाश गिरी के सौजन्य से उनके गृह ग्राम मरौद में सम्पन्न हुआ। - संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री

म.द.आ.उ.मा. विद्या टाटीबन्ध रायपुर में कक्षा १२वीं के विद्यार्थियों का बिदाई समारोह सम्पन्न

रायपुर। महर्षि दयानन्द उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में दिनांक ४ फरवरी २०१७ को कक्षा १२वीं के विद्यार्थियों का बिदाई समारोह आयोजित की गई, जिसके मुख्य अतिथि छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी रहे। सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी द्वारा कक्षा १२वीं के विद्यार्थियों को आशीर्वाद वचन के रूप में अपना उद्बोधन दिये और विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। साथ ही मंच पर छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य, कोषाध्यक्ष डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, उपमंत्री श्री चतुर्भुज कुमार आर्य, लक्ष्मण प्रसाद वर्मा जी द्वारा कक्षा १२वीं के विद्यार्थियों को आशीर्वाद वचन दिये तथा विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किये। विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह द्वारा कक्षा १२वीं के विद्यार्थियों को आशीर्वाद वचन के रूप में अपने वक्तव्य रखे तथा उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी गई। इस कार्यक्रम का संचालन व्यवस्था विद्यालय के शिक्षक श्री संजय शास्त्री एवं कक्षा १२वीं के छात्र/छात्राओं द्वारा किया गया। साथ में विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षिकाएँ श्रीमती निर्मला बाजपेयी, श्रीमती संगीता सिंह एवं श्रीमती माला कुकरेजा द्वारा भी विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया गया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षक/शिक्षिकाएँ सम्मिलित हुए। - संवाददाता : प्राचार्य, म.द.आ.उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर

गुरुकुल नवप्रभात आश्रम का १५वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नूँआपाली (बरगड़)। तपोनिष्ठ स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद से संचालित गुरुकुल नवप्रभात आश्रम नूँआपाली बरगड़ उड़ीशा का १५वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ९ व १० फरवरी १७ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण तथा ५१ कुण्डीय महायज्ञ स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इसे सफल बनाने के लिए आर्यजगत के उच्चकोटि के सन्यासी, विद्वान् व आर्यजन पधारे हुए थे, जिनमें स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी संविदानन्द जी, स्वामी देवव्रत जी, स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, श्रीमती रुपकुमारी चौधरी छ.ग. शासन, प्रो. महावीर जी, डॉ. सोमदेव शतान्धु, बहन लीला कुट्टी जी, श्री दयानन्द शर्मा, श्री जगदीश शर्मा, श्री नरदेव आर्य, डॉ. शिवशंकर शास्त्री, प्रेमप्रकाश शास्त्री, डॉ. अजय आर्य, श्री धनुर्धर महापात्र, कृष्णदेव शास्त्री, धीरेन्द्र शास्त्री, पुरुन्दर शास्त्री, वांछनिधि नायक प्रमुख थे। ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारियों का सस्वर वेदपाठ, सांस्कृतिक, कृषि-गोरक्षा व पर्यावरण सम्मेलन आकर्षण के केंद्र थे। छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा से श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री रायपुर संभाग भी उपस्थित रहे। सभा की ओर से ३१०० रुपये का सहयोग दिया गया। महर्षि दयानन्द क्लब बरिहापाली, साईसेवक संघ श्रद्धापाली व समस्त आश्रम प्रेमी बंधुओं का विशेष सहयोग रहा। सम्पूर्ण कार्यक्रम के मार्गदर्शक डॉ. सोमदेव जी शतान्धु थे। गुरुकुल के अध्यक्ष भगवानदेव जी, कन्या गुरुकुल की आचार्य डॉ. अहल्या नायक व गुरुकुल के आचार्य वृहस्पति जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। - संवाददाता : प्रेमप्रकाश शास्त्री, महासमुन्द

राजिम कुम्भ मेला में विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत् कथा सम्पन्न

राजिम। दिनांक १० फरवरी से २४ फरवरी २०१७ तक चल रहे राजिम कुम्भ मेला के पावन अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १५ फरवरी से २४ फरवरी २०१७ तक वेद प्रचार, विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत् कथा अपार हर्षोल्लास के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आमंत्रित विद्वान् थे आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, पं. नन्द कुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक सतना (म.प्र.), आचार्य जगबन्धु शास्त्री सलखिया रायगढ़, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा बंसना, पं. मुकेश शास्त्री अथर्ववेदाचार्य वेद विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर, आचार्य उद्धव शास्त्री धर्माचार्य सेक्टर-६ भिलाई सहित विशेष आमंत्रित वानप्रस्थीगण थे, सर्वश्री नित्यानन्द मुनि, कर्ममुनि, देव मुनि, हेम मुनि, बीरबल मुनि, अधिकारी मुनि, यादव मुनि, भगवानो मुनि, सोम मुनि, भक्त मुनि, चिन्तन मुनि, राम मुनि, वासु मुनिगण, देवनाथ मुनि के अतिरिक्त सर्वश्री दयानन्द जी आर्य, जगतराम आर्य, मोहनलाल आर्य, आचार्य रणवीर जी शास्त्री कांसा बघौद, श्रीमन्त हीरानन्द जी, श्री परमानन्द जी महाराज, श्री टिकेन्द्र जी, श्री धनीराम आर्य, श्री भगवानो आर्य, श्री गोलू जी आर्य, श्री लोकनाथ आर्य प्रबंधक दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर, अनिल आर्य, दुर्गा मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में सभा मंत्री दीनानाथ वर्मा सभी दिन उपस्थित रहते हुए वेद प्रचार में विशेष सहयोग करते हुए १००० सत्यार्थ प्रकाश को मात्र १० रुपया प्रति नग के अल्प मूल्य पर श्रद्धालु लोगों को वितरण किये। आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा बेमेतरा से पधारे हुए आर्केस्ट्रा ग्रुप के साथ सुमधुर भजनोपदेश दिनांक २१ से २४ फरवरी २०१७ तक प्रचार किया गया और दिनांक २० से २४ फरवरी तक पं. नन्द कुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक द्वारा ढोलक वादक श्री मानिकपुरी के साथ अत्यन्त हृदयग्राही तलस्पर्शी भजनोपदेश दिया गया। दिनांक २३ फरवरी २०१७ को सायंकाल ७ बजे से १० बजे तक ऋषि दयानन्द की जीवनी एवं आर्यसमाज प्रचार के प्रोजेक्टर द्वारा चलचित्र दिखाया गया, जिसमें हजारों की संख्या में दर्शकगण उपस्थित रहे। इसी दिन महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के प्राचार्य सहित समस्त स्टॉफ उपस्थित रहे। दिनांक २४ फरवरी २०१७ ऋषि बोधोत्सव को प्रातः शाही स्नान के बाद नगर भ्रमण हेतु जुलूस में आर्यसमाज पण्डाल से सभा प्रधान सहित समस्त वानप्रस्थीगण भाग लिये। सभा के उपप्रधान माननीय श्री सोमप्रकाश गिरी जी महाराज एवं श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर का विशेष सहयोग रहा। सभा कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य एवं सभा के प्रबंधक श्री यादव जी, श्री नारायण कौशिक, श्रीमती विजयलक्ष्मी ठाकुर, श्रीमती मोंगरा बाई का विशेष सहयोग रहा। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के अनेकानैक पदाधिकारी एवं आर्यसमाज राजेन्द्र नगर कटोरातालाब रायपुर के पदाधिकारी एवं सदस्य तथा आर्यसमाज वृत्तखण्ड-६ भिलाई के पदाधिकारी एवं सदस्यगण आर्य समाज के पण्डाल में उपस्थित होकर वेदप्रचार में विशेष सहयोग दिये। आर्यसमाज के पण्डाल में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया जिसमें अपार भीड़ रही। प्रिंट मीडिया वाले पत्रकारगण एवं फोटोग्राफरों का विशेष आगमन हुआ।

संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर मंत्री दीनानाथ वर्मा

डी.ए.वी. नन्दिनी में हर्षोल्लास से मना-दयानन्द बोधोत्सव

नन्दिनी। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक २३ फरवरी १७ को डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी में आर्यसमाज का महत्वपूर्ण जारण पर्व ऋषि बोध दिवस विद्यालय के सभागार में बड़ी धूमधाम से हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विद्यालय के प्राचार्य श्री राजशेखर जी ने इस दिवस का मुख्य उद्देश्य नैतिकता तथा सामाजिक जागरूकता को फैलाकर दयानन्द जी के पथ पर चलने की प्रेरणा दी तथा भौतिक शास्त्र के शिक्षक श्री रमेश मिश्रा ने भी स्वामी दयानन्द के जीवनी पर प्रकाश डाला, विद्यालय के वरिष्ठ संस्कृत शिक्षक श्री कर्मवीर जी ने स्वामी दयानन्द के जीवन दर्शन को अनेक प्रसंग को लेकर चर्चा की। एक सौ अस्सीवें बोध दिवस की पावन बेला में विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं के द्वारा एक लघु नाटिक (सच्चे शिव की खोज) का मंचन किया गया। इस एक दिवसीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के अनेक प्राचार्यों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा को द्विगुणित कर दिया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की संस्कृत शिक्षिका सुश्री ज्योति ने उत्तम रीति से किया। अंत में प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन की घोषणा की गई।

संवाददाता : डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल, नन्दिनी माइन्स भिलाई

गुरुकुल हरिपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हरिपुर। सप्तम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव गुरुकुल हरिपुर जुनवानी में दिनांक २८ से ३० जनवरी २०१७ तक सम्पन्न हुआ। दिनांक २९ जनवरी २०१७ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य उपस्थित हुए थे। अनेकानेक गणमान्य एवं दानी महानुभाव कार्यक्रम में उपस्थित हुए थे। सभा से मंत्री आर्य दीनानाथ वर्मा एवं उपमंत्री श्री चतुर्भुज कुमार आर्य समापन अवसर पर उपस्थित रहे। समापन दिवस पर रायपुर से श्री विनोद जायसवाल सपत्नीक यजमान बने थे। आर्यसमाज राजेन्द्र नगर कटोरातालाब रायपुर से प्रधान दयालदास आहुजा, मंत्री तपेश्वर कुमार शर्मा सहित छैः लोग दिनांक २९ जनवरी २०१७ को उपस्थित रहे। कार्यक्रम से लौटकर श्री दीनानाथ वर्मा, मंत्री

घोषणा - पत्र

(फार्म - ४ नियम - ४)

- | | |
|--|--|
| ◆ प्रकाशन का स्थान | - दुर्ग (छ.ग.) |
| ◆ प्रकाशन की अवधि | - मासिक |
| ◆ भाषा | - हिन्दी |
| ◆ मुद्रक का नाम | - आचार्यअंशुदेव आर्य
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दुर्ग (छ.ग.) |
| क्या भारत का नागरिक है | - हाँ |
| ◆ प्रकाशक का नाम | - आचार्य अंशुदेव आर्य
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा |
| क्या भारत का नागरिक है | - हाँ |
| ◆ सम्पादक का नाम | - आचार्य कर्मवीर |
| क्या भारत का नागरिक है | - हाँ |
| पता | - छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) |
| ◆ उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हैं। | - छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा |

मैं आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

हस्ताक्षर

आचार्य अंशुदेव आर्य

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की २८वीं पुण्यतिथि में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

रायपुरा (रायपुर)। डॉ. देवसिंह वर्मा खरोरावाले के सौजन्य से दिनांक ६ से ९ फरवरी २०१७ तक महादेव घाट, अमलेश्वर पुल के पास, महामृत्युंजय मंदिर के सामने, रायपुरा, रायपुर में डॉ. साहब के नवनिर्मित भव्य भवन में स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की २८वीं पुण्यतिथि के अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ पाणिनी कन्या महाविद्यालय बनारस से पधारी आचार्या डॉ. संजीवनी शास्त्री के ब्रह्मत्व एवं साथ में ६ ब्रह्मचारिणी वेदपाठियों द्वारा यज्ञ, भजन, प्रवचन सम्पन्न हुआ। ११८ वर्षीय वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी लुधियाना (पंजाब) उपस्थित थे। पं. शिवकुमार आर्य धर्माचार्य आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. एवं विदर्भ नागपुर उपस्थित थे। पूर्णाहुति अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा उपस्थित थे। श्रीमती प्रेमलता वर्मा (पत्नी डॉ. देवसिंह वर्मा), श्री कुलेश्वर प्रसाद वर्मा पुत्र, डॉ. रश्मि वर्मा पुत्रवधू, डॉ. व्यासनारायण वर्मा पु, श्रीमती ज्योति वर्मा पुत्रवधु मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. कमलनारायण वेदाचार्य संरक्षक के रूप उपस्थित रहे साथ ही श्री नन्द कुमार आर्य उपस्थित रहे। जर्वे से श्री गणेशप्रसाद आर्य, लवन से सर्वश्री मल्लूराम साहू, पंचराम आर्य, डॉ. गंगाधर आर्य कसडोल से, बृजभूषण देवांगन, कुबेर नायक खरोरा, संजय शुक्ला (पं. रविशंकर शुक्ल के पोता), श्री मोहनलाल चावड़ा की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। लगभग ५०० स्वामी दिव्यानन्द जी के भक्त प्रतिदिन उपस्थित रहते थे और ऋषि लंगर डॉ. साहब के घर में सम्पन्न होता था। उल्लेखनीय यह है कि डॉ. साहब के नवनिर्मित भवन का इसी अवसर शालाकर्म गृहप्रवेश कार्यक्रम भी सोल्लास सम्पन्न हुआ।

- कार्यक्रम से लौटकर श्री दीनानाथ वर्मा, सभा मंत्री

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी संवत् २०७३-२०७४ तदनुसार सन् २०१७ ई.

क्र.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	संवत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१.	लोहड़ी	माघ कृष्ण १	२०७३	१३-०१-२०१७	शुक्रवार
२.	मकर संक्रांति	माघ कृष्ण २	२०७३	१३-०१-२०१७	शनिवार
३.	गणतंत्र दिवस	माघ कृष्ण १४	२०७३	२६-०१-२०१७	गुरुवार
४.	बसन्त पंचमी	माघ शुक्ल ५	२०७३	०१-०२-२०१७	बुधवार
५.	सीताष्टमी	माघ शुक्ल ८	२०७३	११-०२-२०१७	रविवार
६.	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृ.-१०	२०७३	२१-०२-२०१७	मंगलवार
७.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन कृ.-१३	२०७३	२४-०२-२०१७	शुक्रवार
८.	लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शु.-९	२०७३	०६-०३-२०१७	सोमवार
९.	नवसंस्पृष्टि (होली) मिलन पर्व	फाल्गुन पूर्णिमा	२०७३	१२-०३-२०१७	रविवार
१०.	नवसंवत्सरारम्भ: (आर्यसमाज स्थापना दिवस)	चैत्र शुक्ल - १	२०७४	२९-०३-२०१७	बुधवार
११.	रामनवमी	चैत्र शुक्ल- ९	२०७४	०५-०४-२०१७	बुधवार
१२.	वैशाखी	वैशाख कृ.-२	२०७४	१३-०४-२०१७	गुरुवार
१३.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शु.- ३	२०७४	२६-०४-२०१७	बुधवार
१४.	रक्षा बंधन (श्रावणी उपाकर्म)	श्रावण पूर्णिमा	२०७४	०७-०८-२०१७	सोमवार
१५.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद कृ. ८	२०७४	१५-०८-२०१७	मंगलवार
१६.	स्वतंत्रता दिवस	भाद्रपद कृ. ८	२०७४	१५-०८-२०१७	मंगलवार
१७.	दशहरा (विजयादशमी)	आश्विन शु. १०	२०७४	३०-०९-२०१७	शनिवार
१८.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द जन्मदिवस	आश्विन शु. १२	२०७४	०२-१०-२०१७	सोमवार
१९.	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या	२०७४	१९-१०-२०१७	गुरुवार
२०.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष शुक्ल ५	२०७४	२३-१२-२०१७	शनिवार

विशेष टिप्पणी : १. आर्य समाजें इन पर्वों को उत्साहवर्धक मनाएँ। २. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

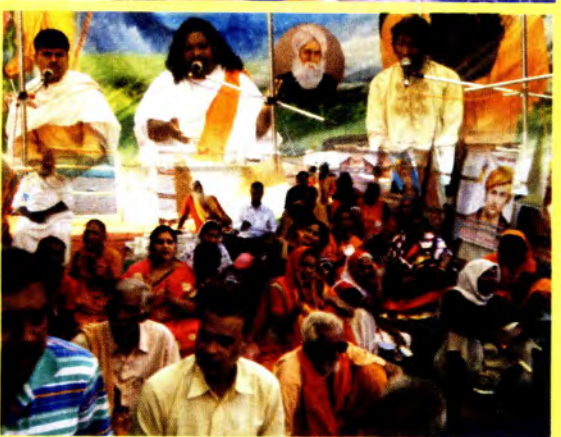


स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की 28वीं पुण्यतिथि के अवसर पर डॉ. देवसिंह वर्मा के निवास में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न



दि. 11 फरवरी 2017 को आर्यसमाज सिरपुर (महासमुन्द) में भूमिपूजन शिलान्यास समारोह सम्पन्न एवं दानदाता का भव्य सम्मान

दिनांक 17 से 24 फरवरी 2017 तक सम्पन्न राजिम कुंभ मेला में विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत् कथा की झलकियाँ





के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।



मसाले
असली मसाले
सच-सच



महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सम्पादक प्रकाशक शुद्ध आचार्य अंगुदेव आर्य द्वारा छवीसमूह प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001